चन्दामामा
नवम्बर १९९३
RS
4

ब बोले तो क्या बोले? पिकनिक का सच्चा स्वाद है जी.

पारले-जी

स्वाद भरे, शक्ति भरे.

भारत के सबसे ज्यादा बिकनेवाले बिस्किट.

everest/93/PP/171-hn

डायमण्ड कॉमिक्स पेश करते हैं

विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय कामिक्सों की एक अटूट श्रृंखला

फैण्टम
कामिक्स जगत का एक अद्भुत पात्र, जो सैकड़ों वर्ष से जिन्दा है। जिसने दुनिया भर से बुराई को खत्म करने का संकल्प लिया हुआ है। जो रहता तो घने जंगल में है, पर उसका कार्य क्षेत्र पूरे विश्व भर में फैला है। वह दोस्तों का दोस्त है दुश्मनों के लिए साक्षात मौत।

भाग 1 से 28 तक उपलब्ध है।

भाग 1 से 15 तक उपलब्ध है।

मैनड्रेक
विश्व में सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला पात्र... जादूगर मैनड्रेक सिर्फ संकेत भर से ही किसी को भी सम्मोहित कर सकता है। अपराधी उसे खत्म कर देने के लिए संकल्पशील हैं, पर वह अपनी जादुई शक्तियों के सहारे प्रत्येक पर, हर बार विजय हासिल कर लेता है।

स्पाइडर मैन
एक अनूठा व्यक्तित्व... प्रगटतः एक खूबसूरत और जिंदादिल इंसान.. लेकिन जिसे अपराध और अपराधी से घृणा है। स्पाइडर मैन के रूप में, जब वह दुश्मन पर धावा बोलता है तो दुश्मनों में खलबली मच जाती है।

भाग 1 और 2 उपलब्ध है।

भाग 1 से 15 तक उपलब्ध है।

जेम्स बाण्ड
इंग्लैंड की गुप्तचर संस्था का एक तेज-तर्रार जासूस... रूप बदलने में माहिर और सुन्दर औरतों का रसिया। जब अपने अभियान पर निकलता है तो सभी रुकावटों को तोड़ता मंजिल पर पहुंच कर ही दम लेता है।

सभी कामिक्सों के साथ स्टिकर फ्री!

1 अक्तूबर को प्रकाशित डायमण्ड कामिक्स	
प्राण का–बिल्लू और क्रिकेट	8.00
लम्बू मोटू और परमाणु रियेक्टर	8.00
प्राण का–पिंकी और गब्बू का बोझ	8.00
चाचा भतीजा और पागल हाथी	8.00
महाबली शाका और शैतान से मुठभेड़	8.00
फैण्टम-27 (डाइजेस्ट)	15.00

15 अक्तूबर को प्रकाशित डायमण्ड कामिक्स	
प्राण का–रमन और सीरियल का हीरो	8.00
अग्निपुत्र अभय और ब्लैक थंडर (1994 की डायरी फ्री)	15.00
राजन इकबाल और चालाक किंग	8.00
फौलादी सिंह और टाइम मैन	8.00
मामा भांजा और बूढ़ कुमार की नानी	8.00
ताऊजी और मुर्दों का मसीहा	8.00

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Go ahead
Try-Me!
I remember the day we moved into our new home. The boys and girls on the block looked like they were having `hazaar' fun. But no, they didn't look too interested in me.
How do you walk up to a new gang and make them your pals? Think...Think. So I just chuck a Try-Me in my mouth...walk my best tough-guy-walk and offer them a handful of Try-Me - "Go ahead, Try Me!" Yeah. I made five new best pals that day.
Parry's
Try-Me!
Parry's
Try-Me!
The Bold New Taste
HTA-8507

एको स्केच से रंगबिरंगे मुखौटे न केवल बनाना आसान... बल्कि ये है मौज-मस्ती का सामान!
एको – अनेक सुंदर रंगों में १२, २४ और ३० के पैक में उपलब्ध.
और एको की सबसे बड़ी खूबी, ये हैं वॉटर-बेस रंग और अविषैले भी यानी
इनका इस्तेमाल भी नन्हें-मुन्नों के लिए पूरी तरह सुरक्षित है!
एको से बनाइए सुंदर मुखौटे!
और फिर जब मम्मी देखेंगी आपका कमाल...
तो खुशी से होगा बुरा हाल!
हजारों इनाम जीतो!
एको 'फन-विद-कलर्स' प्रतियोगिता में हिस्सा लीजिए! प्रवेश-पत्र हर पैक के साथ उपलब्ध है.
एको – मौज़मस्ती का बेहिसाब हंगामा!
मुफ्त! कलरिंग बुक हर पैक के साथ!
Ekco®
आपकी कला की सुंदर अभिव्यक्ति.

वैमीकोल चमत्कारी गम
ख़ूब चिपकाओ उसके संग
गुड़िया का एक सुन्दर सा घर बनाओ, फर्नीचर और दूसरी चीजों से सजाओ। मोटे-ताजे जानवर, मजेदार मुखौटे, और खिलौने। लकड़ी, कागज, कार्ड-बोर्ड, फैब्रिक... कुछ भी इस्तेमाल करो! मौज मस्ती की कोई सीमा नहीं। सोचते जाओ, बनाते जाओ, अपना खाली समय बेहतर ढंग से बिताओ।
VAMICOL®
आर्ट एण्ड क्राफ्ट एडहेसिव
वैम ऑरगेनिक
केमिकल्स लिमिटेड
स्काईलाइन हाउस, 85, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019
VAMICOL
VAMICOL

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

अमेरीका में भी कम साक्षरता

अपने यौवन-काल में महात्मा गाँधी बारिस्टर बने और दक्षिण अफ्रीका में वकालत की । प्रारंभ में अपनी वकालत उन्होने भारत में नहीं की । उनकी तरह बहुत-से भारतीयों की शिक्षा विदेशों में ही हुई । इनमें बहुतों ने भारत के बाहरी देशों में ही नौकरी की । अधिकतर यही पद्धति अमल में रही । आजकल बहुत-से भारतीय अपने ही देश में उच्च परीक्षाएँ उत्तीर्ण हो रहे हैं और विदेशों में नौकरियों के लिए जा रहे हैं । इसपर गंभीर चर्चाएँ हुई और हो रही हैं । इन चर्चाओं का मुख्य विषय है "बुद्धिजीवियों का विदेशों में जाना ।" विदेशों में जाने की इस प्रवृत्ति को रोकने की सलाहें दी जा रही हैं । बारंबार बताया जा चुका है कि उनके स्वदेश में रहने से भारत के विकास में योगदान मिलेगा ।

पश्चिम की ओर, विशेषतया अमेरीका की ओर आकर्षित होने की बात की जा रही है । ब्रिटेन तथा कुछ प्रधान यूरोपियन देशों की ओर भी यह आकर्षण है । वे सब प्रगतिशीत तथा विकसित देश हैं । भारत तो उन देशों में से है, जिसका विकास हो रहा है । तृतीय विश्व के कुछ ऐसे देश भी हैं, जो विकास की स्थिति में हैं ।

हाल ही में अमेरीका के बारे में आश्चर्य में डुबो देनेवाले कुछ तथ्य मालूम हुए हैं । अब तक अधिकांश लोग इस भ्रम में थे कि किसी भी संपन्न देश से वह देश बिल्कुल ही आगे है । ज्ञात हआ है कि इस देश के वयस्कों में से आधे वयस्कों की पठन व लेखन की क्षमता सीमित है । गणित में तो उनका ज्ञान शून्य के बराबर है । उन्हें अच्छी नौकरी मिलने में भी काफ़ी दिक़्क़तें हो रही हैं ।

अमेरीका में १९१,०००,००० वयस्क हैं । उनमें से ९०,०००,००० वयस्कों में आवश्यक योग्यताओं का अभाव है । शिक्षा-विभाग द्वारा जो सर्वेक्षण हुआ, उसके अनुसार इनमें से पाँच करोड़ वयस्कों की स्थिति बिलकुल ही बुरी है । पता चला कि वे किंसी आवेदन-पत्र की पूर्ति भी नही कर सकते ।

संक्षेप में यों कहें कि अमेरीका के हमारे आधे वयस्क बंधु अशिक्षित वर्ग में आते हैं । भारत तथा एशिया के शिक्षित व्यक्ति अमेरीका में महत्वपूर्ण व मूल्यवान माने जाते हैं । उनको उसी देश में रहने केलिए आकर्षक परिलब्धि का वचन दिया जाता है ।

वर्ष : ४६ नवंबर १९९३ अंक : ३

एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

बन जाइए
बार्बी की
ड्रेस
डिज़ाइनर
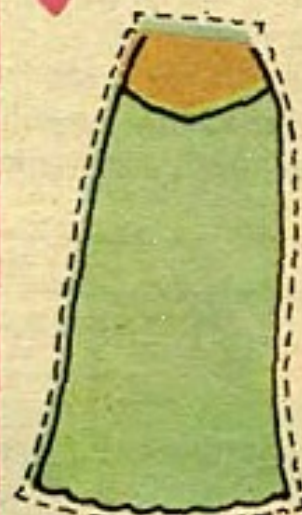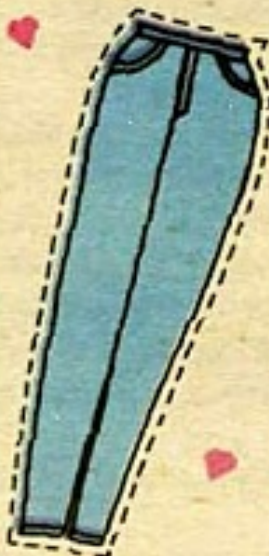
Barbie
FROM
LEO

दुश्मन जो दोस्त हुए

यहूदी और पालिस्तीन के अरबी बहुत ही लंबे अर्से से आपस में लड़ते-झगड़ते आ रहे हैं । उन दोनों में पिछले सितंबर १३ को, जो शांति का ऐतिहासिक समझौता हुआ, तद्वारा वे दोस्त हुए। वाषिंगटन में संसार के नेताओं के समक्ष यह समझौता हुआ । पालिस्तीन के विदेश मंत्री षिमोन पेरिज, पालीस्तीन विमोचन संस्था (पी. एल. ओ) के राजनीति विभाग के अध्यक्ष मोहम्मद अब्बास ने इस समझौते पर दस्तखत किये । इज़राइल के प्रधान इज़ाक राबिन और पालिस्तीन के विमोचन संस्था के अध्यक्ष यासर अराफ़त ने इस अवसर पर हाथ मिलाये और इस समझौते पर अपना हर्ष व्यक्त किया ।

शरणार्थी यहूदी पालिस्तीन में आकर बस गये थे । उन्होंने अरबों को वहाँ से भगाया । इस को लेकर चार दशाब्दियों से हिंसात्मक लड़ाइयाँ होती रहीं, बहुत-सा खून बहाया गया । इस शांति के समझौते के कारण गाज़ा घाटी के पश्चिमी तट पर करीब जो ३,००,००० पालिस्तीन के बाशिंदे हैं, स्वयं शासन चला पायेंगे । आशा की जाती है कि पालिस्तीनियों और इज़राइल के यहूदियों के बीच में दो सालों में जो संपूर्ण समझौता होनेवाला है, उसके लिए यह प्रथम सीढ़ी है ।

बाईस महीनों के पहले संयुक्त राष्ट्र संघ में जो प्रस्ताव पारित हुआ, उससे इस समझौते का बीज बोया गया है । संयुक्त राष्ट्र संघ में पारित प्रस्ताव यों था "इज़राइल-पालिस्तीन दोनों देशों का यह सम्मिलित कर्तव्य है कि वे जेरूसलम में आये शरणार्थी व सरहदें आदि समस्याओं को परस्पर सुलझावें"

कहा जा सकता है कि १९१७ नवंबर १२ को जो बाल्फर घोषणा हुई, तब से यहूदी और पालिस्तीनियों के बीच में विवाद का प्रारंभ हो गया । 'लीग आफ नेशन्स' के आदेशानुसार ब्रिटेन उस समय पालिस्तीन के मामलों को देख रहा था । उस समय के ब्रिटेन के विदेशी सचिव लार्ड आर्थर बाल्फर ने यहूदियों की 'मातृभूमि' बनाने की योजना को अपना समर्थन दिया । घोषणा के पहले वहाँ बसे यहूदियों ने कहा कि वहाँ

यहूदियों के शासन की आवश्यकता नहीं है । लेकिन घोषणा के बाद संपूर्ण पालिस्तीन को अपनी मातृभूमि के रूप में घोषित किया । बाल्फर ने सिर्फ़ इतना ही कहा था कि यहूदी पालिस्तीन में अपनी मातृभूमि की स्थापना कर सकते हैं । लेकिन यहूदी क्रमशः पालिस्तीन में बस जाने लगे और वहाँ के अरबों को वहाँ से खदेड़ना शुरू कर दिया ।

द्वितीय विश्व-युद्ध (१९३९-४५) के समाप्त होते-होते पालिस्तीन में यहूदियों की संख्या अरबों से भी अधिक हो गयी । यहूदियों की: मातृभूमि की तीव्र इच्छा 'जियोनिज़म' बल पकड़ती गयी । संयुक्त राष्ट्र संघ यहूदियों के शासन को सदस्यता देने के लिए सन्नद्ध हो गयी । १९४८ मई १४ को यहूदियों ने 'इज़राइल' राज्य की स्थापना की घोषणा कर दी । यह घोषणा एकपक्षीय थी । उस समय से १९८८ तक पालिस्तीनियों तथा इज़राइल के यहूदियों के बीच युद्ध ज़ारी रहा ।

१९६७ में इज़राइल ने, ईजिप्ट, सिरिया, और जोर्डान को युद्ध में हराया । गाज़ा घाटी सिनाय, सिरिया के गोलान शिखरों तथा जोर्डान नदी के पश्चिमी तट को अपने अधीन किया ।

१९७३ में ईजिप्ट ने इज़राइल से लड़ाई की और जो सिनाय खोया था, उसे पुनः प्राप्त किया । इसी समय लेबनान के बेरूट में पालिस्तीनी विमोचन संस्था (पी. एल. ओ) का संगठन हुआ । तब से वह अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिए लड़ रहा है । पी. एल. ओ यह लड़ाई १९७८ से लड़ रहा है । उनके गेरिल्ला आक्रमण पर आघात करने के लिए १९८२ में इज़राइल ने लेबनान को घेरा । इस वजह से पी. एल. ओ का कार्यालय टुनीशिया बदलना पड़ा । १९८८ में जोर्डान देश ने घोषित किया कि जोर्डान नदी का पश्चिमी तट पालिस्तीन की जनता की संपत्ति है ।

१९९० में अमेरीका तथा तब के सोवियत रूस ने अरबी तथा यहूदियों से आग्रह किया कि वे चर्चाओं के द्वारा दोनों अपनी समस्याओं को शांतिपूर्वक सुलझा लें । संयुक्त राष्ट्र संघ ने उसका समर्थन किया । १९९१ में स्पेन में चर्चाओं का आरंभ हुआ । बाईस महीने बीत गये । पी. एल. ओ के अध्यक्ष यासर अराफ़त ने नार्वे को मध्यस्थ बनाकर इज़राइल के नेताओं के साथ गुप्त चर्चाएँ कीं । अराफ़त ने ख़त भेजा कि वह इज़राइल के अस्तित्व को स्वीकार करता है । इसके उपरांत तात्कालिक शांति-समझौते के अंशों पर चर्चाएँ हुईं । उसे एक रूप दिया गया ।

अमेरीकी अध्यक्ष बिल क्लिंटन ने, इस समझौते पर होनेवाले हस्ताक्षरों का अवलोकन करने के लिए यासर अराफ़त और इज़ाक राबिन को वाषिंगटन आने का आह्वान दिया । हस्ताक्षर और हाथ मिलाने का कार्यक्रम पूरा होने के बाद बिल क्लिंटन ने कहा "एक बहुत ही बड़ी ऐतिहासिक घटना हमने अपनी आँखों देखी है । इससे हमारा बिश्वास और दृढ़ हो रहा है । प्रधान (राबिन), अध्यक्ष (अराफ़त) आज का दिन आपका दिन है । कल का दिन उन सबका होगा" । वहाँ आये हुए इज़राइल और पालिस्तीन के बच्चों को दिखाते हुए उन्होने यह व्यक्त किया ।

शत्रु, अपने पारस्परिक विवादों को चर्चाओं के द्वारा सुलझाकर मित्र हो सकते हैं, यह समझौता इसका एक जीता-जागता उदाहरण है ।

नेक आदमी का भाग्य

लक्ष्मी रामपुर नामक गाँव में रहती थी । वह सुंदर और तेज़ लड़की थी । उसकी शादी की उम्र हो गयी । पड़ोस के गाँव का राम उसे बहुत अच्छा लगा क्योंकि वह बहुत ही नेक और नादान युवक था ।

जब शेखर को यह बात मालूम हुई तो लक्ष्मी के पास जाकर उसने कहा" राम बेवकूफ़ है । उससे शादी करने से तुम तकलीफ़ों में फँस जाओगी । मुझसे शादी करोगी तो मैं तुम्हें सुखी रखूँगा, किसी भी तकलीफ़ को पास भी पटकने नहीं दूँगा ।"

लक्ष्मी ने उसकी बात का खंडन करते हुए कहा "राम में अक़्ल की क्या कमी है? उससे अधिक अक़्लमंद इस गाँव में ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगा ।"

"तो हम दोनों की अक़्ल की परीक्षा लो । तुम्हें ही मालूम होगा कि वह कितना बड़ा बेवकूफ़ है" शेखर ने कहा ।

लक्ष्मी ने राम और शेखर को दस-दस रुपये दिये और कहा कि इन रुपयों से मेरी पसंद की कोई चीज़ लाओ ।

फिर राम से उसने कहा "तुम जो भी लाओगे, अवश्य ही मुझे पसंद आयेगा । लेकिन हाँ , एक बात याद रखो , जहाँ कहीं भी रहो , अपनी नेक नीयत मत छोड़ना । वही तुम्हारी प्रतिष्ठा को और बढ़ायेगी ।"

राम जो भी लाये, लक्ष्मी वही पसंद करेगी, इसलिए शेखर ने निर्णय किया कि वह राम को कोई वस्तु लाने नहीं देगा । इसके लिए उसने छिपे-छिपे एक आदमी को तैनात किया ।

दोनों शहर पहुँचने के लिए जब जंगल से गुज़र रहे थे तब शेखर ने राम से कहा" यहीं इर्द-गिर्द के किसी पेड़ के कोटर में मैंने कुछ समय पहले सौ रुपये छिपाये थे । मैं नहीं चाहता कि कोई उस जगह को जाने ।

शशिकला वर्मा

राम को इस बात का पता नहीं था । शेखर पेड़ों के बीच उस आदमी से मिला । शेखर ने उसे बताया कि उसे क्या करना होगा । वह आदमी राम के पास गया , चाकू निकाली, उसे डराया-धमकाया और उसके पास जितने रुपये थे, ले लिया । वे रुपये उसने शेखर को सौंप दिया । शेखर ने उस आदमी को एक रुपये का पुरस्कार दिया और उसे भेज दिया । फिर वह राम के पास आया ,मानों वह कुछ भी नहीं जानता हो । राम ने सविस्तार जो भी हुआ, शेखर को बताया और कहा "जैसा तुमने बताया, ठीक वैसा ही हुआ है । तुम्हारी मेहरबानी से लक्ष्मी के वे दस रुपये मात्र बच गये,जो मैंने तुम्हें दिये थे ।"

दोनों जब शहर पहुँचे, गहनों की एक दूकान में गये । वहाँ शेखर ने दस रुपयों में एक गहना खरीदा । यह देखकर राम ने भी एक गहना खरीदना चाहा । दुकानदार इस पर हँस पड़ा और बोला "शेखर ने अपनी अक़्लमंदी से बहुत बार हमारी मदद की है । हम जानते हैं कि मुफ़्त में वे कुछ नहीं लेंगें, इसलिए उनसे सिर्फ़ दस रुपये लेकर उन्हें वह गहना दिया है । और कोई होता तो दो सौ रुपयों से कम में नहीं देंगे ।"

तुम यहीं रहो । वे रुपये ले आऊँगा " ।

शेखर ने पेड़ के कोटर में रुपये छिपाये, इस बात पर राम को अवश्य ही आश्चर्य हुआ, परंतु उसने उससे कुछ भी नहीं पूछा । शेखर ने तब उससे कहा " जंगल में चोर होते हैं । अक़्लमंदों से वे दूर रहते हैं । मुझे दुख है कि तुम्हें अकेला छोड़कर जा रहा हूँ । मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूँ । अपने जो रुपये हैं, अपने ही पास सुरक्षित रखना । लेकिन लक्ष्मी ने जो दस रुपये दिये, उन्हें मेरे पास देना । उन्हें सुरक्षित रखूँगा ।" कहते हुए राम से दस रुपये लिये और पेड़ों के बीच में चला गया ।

शेखर का नियुक्त किया हुआ आदमी भी छिपे-छिपे उनके पीछे-पीछे ही आ रहा था ।

जब राम ने देखा कि शेखर ने इतना क़ीमती गहना खरीदा है तो उसने निश्चय किया कि मैं कुछ भी नहीं खरीदूँगा, क्योंकि जो भी खरीदूँ, उस गहने के सामने कुछ भी नहीं । शेखर अकेले दुकान में गया और दुकानदार को धन्यवाद दिया । क्योंकि

दुकानदार ने वही किया, जैसा करने के लिए उसने बताया था ।

दोनों गाँव लौट पड़े । रास्ते में शेखर ने राम से कहा " तुमने अपना पूरा धन खो दिया है । तुममें अक़्ल नहीं । लक्ष्मी तुमसे शादी करेगी तो सुखी नहीं रहेगी । तुम लक्ष्मी से मेरे बारे में, मेरी अक़्ल के बारे में बताकर उसे मुझसे शादी करने, किसी तरह से मनाना ।"

"तुमने बिलकुल ही सच कहा है । तुम बड़े ही अक़्लमंद हो । लक्ष्मी तुमसे शादी करेगी तो अवश्य ही सुखी रहेगी " कहकर राम ने भी अपनी स्वीकृति दे दी । दोनों जंगल से होते हुए गाँव के नज़दीक पहुँचे । उन दोनों ने एक परदेशी को एक पेड़ के नीचे देखा । उसने उन दोनों के बारे में पूरा विवरण जानने के बाद कहा "एक देवता ने मुझे आदेश दिया है कि मैं अभागों को सहायता पहुँचाऊँ । इस राम को हीरों का यह हार देता हूँ । उसने हीरों का चमकता हुआ हार राम को देते हुए कहा" जो तुम्हें पसंद हैं, उन्ही को यह हार देना । और किसी को भूलकर भी मत देना । याद रखो, तुम अच्छाई नहीं छोड़ोगे तो देवता सदा तुम्हारी सहायता करेंगे " ।

शेखर का गहना राम के गहने के सामने फ़ीका पड़ गया । जब वे दोनों लक्ष्मी के पास पहुँचे तब शेखर ने लक्ष्मी से कहा "राम बेवकूफ़ है । उसका भाग्य है कि उसे हार मिल गया । इसमें उसका कोई बड़प्पन नहीं है " ।

"नेक आदमी को ही भाग्य चाहता है । अगर इस सत्य में तुम्हें विश्वास ना हो तो

शेखर ने राम की आँखों से बचाकर दुकान दार को बाक़ी रुपये दिये । दोनों लौटते हुए गाँव की सरहदों पर पहुँचे । वहाँ उन्हें वही परदेशी दिखायी पड़ा । उसने उन दोनों से जो भी हुआ, जाना ।

शेखर ने परदेशी को अपनी दयनीय कथा बतायी और कहा" महाशय, जंगल में चोर ने मुझसे पूरा धन लूटना चाहा । लेकिन मैंने कुछ रुपये उससे छिपाकर बचा लिया । वे रुपये शहर में खर्च हो गये " ।

परदेशी ने पूरा सुनने के बाद शेखर से कहा "तुम्हारा जैसा अभागा संसार में और कोई नहीं होगा । बीच समुँदर में डूबनेवाले को हाथ का सहारा देकर बचाना चाहें तो उसके भार से हम भी डूब जाते हैं । अभागे का कोई भला नहीं कर सकता । राम भाग्यवान है । कल सबेरे देवता ने मुझे आज्ञा दी है कि ऐसों की ही मैं मदद करूँ" । कहते हुए उसने एक और हीरों का गहना राम को दिया और चला गया ।

दोनों जब लक्ष्मी के पास गये तब उसने राम से वह हार लिया । उसने राम से कहा "दुर्भाग्य पीछा कर रहा था, परंतु भाग्य ने उस पर विजय प्राप्त कर ली ।" फिर शेखर से उसने कहा "तुम्हारा दुर्भाग्य दुर्भाग्य ही बना रहा । यही फ़रक़ है, अच्छाई और बुराई का ।"

यह सुनकर शेखर निराश लौट रहा था तब लक्ष्मी ने उसे रोका । वह घर के अंदर जाकर शेखर का दिया हुआ गहना

तुम दोनो को एक और मौक़ा देती हूँ" लक्ष्मी ने कहा ।

दूसरे दिन लक्ष्मी से दस-दस रुपये ले कर दोनों शहर निकल पड़े । इस बार राम पर पिछली बार जो गुज़रा, वह इस बार शेखर पर गुज़रा । एक चोर ने शेखर को लूटा और राम को छोड़ दिया ।

दोनों गहनों की दुकान में गये । दुकानदार ने राम को देखते हुए कहा "महाशय, आपके मुख पर भाग्य विराजमान है । आप जैसे व्यक्ति हमारी दुकान से कोई चीज़ मुफ़्त में लें तो वही हमारे लिए सब कुछ है । हम भी भाग्यवान बनेंगे" । मुफ़्त में लेना राम को पसंद नहीं था, इसलिए उसने दस रुपये देकर एक छोटा-सा गहना लिया,

ले आयी और उसे लौटाती हुई बोली "इस गहने को स्वीकार करना मेरे लिए न्याय-संगत नहीं होगा । इसे ले और अपनी होनेवाली पत्नी को देना" ।

"मेरी शादी तुमसे नहीं होगी तो क्या हुआ? प्रेम से दिया हुआ यह गहना तुम स्वीकार नहीं कर सकती?" शेखर ने पूछा ।

"दूसरे की संपत्ति मैं अपने पास नहीं रखती । हाँ, एक काम करो । तुम्हारे पड़ोस में जो कामाक्षी है, उसे मेरे पास भेजना । राम को हीरों का जो नक़ली हार दिया है, उसे लौटाना है । यह भी दूसरों की ही संपत्ति है, इसलिए इसे अपने पास नहीं रखूँगी" । लक्ष्मी ने कहा ।

शेखर आश्चर्य प्रकट करता हुआ बोला "कैसा नाटक खेला है तुमने? यह तो बड़ा अन्याय है । तुमने जान बूझकर ही किसी परदेशी को भेजकर मुझे धोखा दिया है ।"

"इसमें अन्याय क्या है ? कामाक्षी के भाई को तुमने चोर बनाकर मुझे धोखा देना चाहा । उसके भाई को मालूम है कि कामाक्षी तुम्हें चाहती है । इसलिए पूरी कहानी उसने मुझे पहले ही बतायी । मैंने भी उसी की मदद लेकर तुम्हें धोखा दिया है । तुमने पहचाना नहीं, परदेशी भी वही है । वेष-धारण में वह बड़ा ही निपुण है । मेरा भाग्य है कि कामाक्षी तुमसे प्रेम करती है । ऐसा नहीं होता तो तुम्हारा धोखा मैं जान नहीं पाती ।" लक्ष्मी ने कहा । शेखर, लक्ष्मी की बातों की सच्चाई को जान गया । अब उसकी समझ में आ गया कि कामाक्षी जैसी अच्छी और अक़्लमंद लड़की का उससे प्रेम करना उसका भाग्य है । वह जान गया कि भाग्य नेक आदमी का ही साथ देता है । जो आदमी कुटिल है, बुरा है, दूसरों को हानि पहुँचाना चाहता है, ज़िन्दगी में कभी सफल नहीं होता । उसे सफलता दिखने लगती है, परंतु वह तात्कालिक है । इस तात्कालिक सफलता के कारण अपनी अक़्लमंदी पर उसे गर्व होने लगता है । अंत में सच्चाई मालूम पड़ जाती है । जो अपनी ग़लती समझकर सुधर जाता है, नेक बन सकता है ।

राम ने लक्ष्मी से, और शेखर ने कामाक्षी से विवाह कर लिया । वे सुख से रहने लगे ।
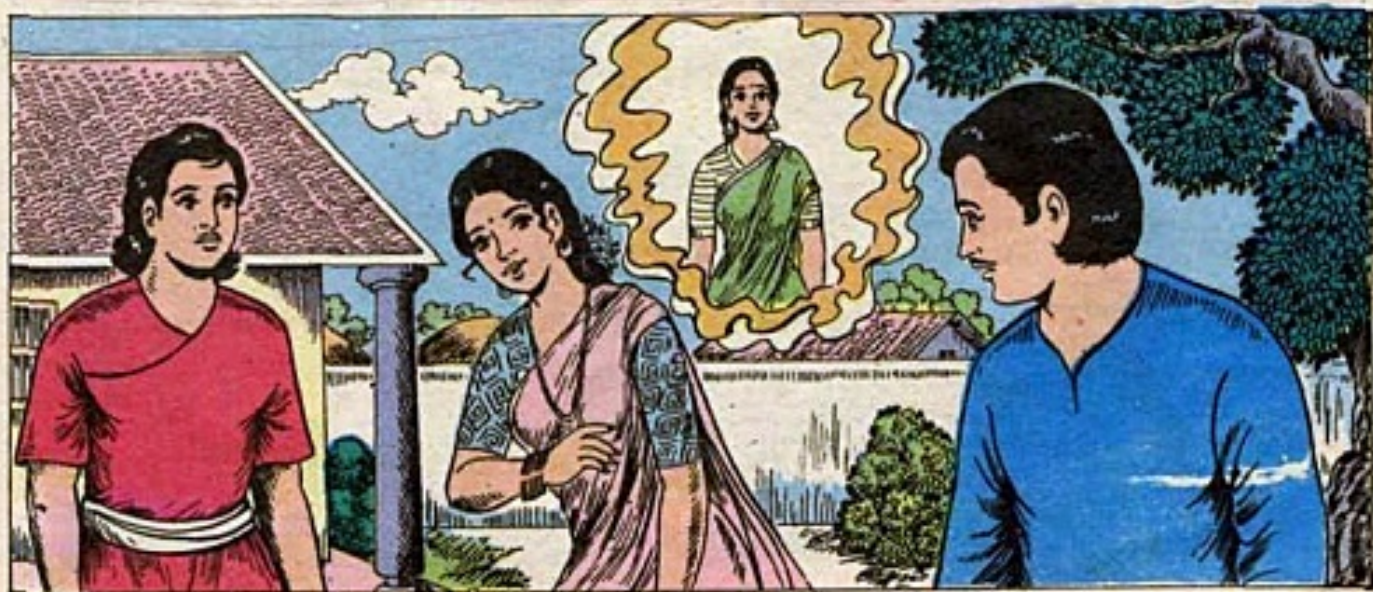
यह कैसा स्वाद?

चंद्रकांत विद्यावती नगर का निवासी था। राजस्थान में नौकरी की खोज में था। एक व्यक्ति ने, जिसे दरबार के विषय में बहुत जानकारी थी, उससे कहा "जिह्वेंद्रनाथ एक राजकर्मचारी है। उसकी सिफ़ारिश से तुम्हें नौकरी मिलने की गुँजाइश है। मैंने सुना है कि उसे पक्षियों से बहुत ही प्रेम है। तुम उससे मिलो और अपने भाग्य को आजमावो।"

चंद्रकांत को मालूम हुआ कि जिह्वेंद्रनाथ का जन्म-दिन इस महीने की पाँचवीं तारीख़ को मनाया जानेवाला है। उसने एक तोता ख़रीदा और उस तोते को बोलना सिखाया। उसे एक पिंजड़े में बंद किया और राजकर्मचारी के जन्म-दिन पर उसे भेंट में दिया।

"आपको आपके जन्म-दिन पर मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ" तोते ने कहा।

जिह्वेंद्रनाथ ने तोते को आश्चर्य से देखा और उसे 'धन्यवाद' दिया।

तोते ने भी जवाब में कहा "धन्यवाद"। चंद्रकांत ने अपनी नौकरी के बारे में जिह्वेंद्रनाथ से बात की। कुछ दिनों के बाद फिर उससे मिला।

जिह्वेंद्रनाथ ने हँसते हुए उससे कहा "सोमवार को नौकरी पर लग जाओ।" फिर पूछा "बोलो, और क्या विशेष बातें हैं?" चंद्रकांत ने उसे अपनी कृतज्ञता प्रकट की और कहा "जो तोता मैंने आपको भेंट की, क्या आपको अच्छा लगा?"

"बहुत अच्छा लगा। सब पक्षियों में से तोते का मांस मुझे बहुत ही स्वादिष्ट लगता है। उसी दिन मैंने तुम्हारे दिये हुए तोते का पका हुआ मांस खाया है। बड़ा मज़ा आया।" जिह्वेंद्रनाथ ने कहा।

—लक्ष्मी विद्या
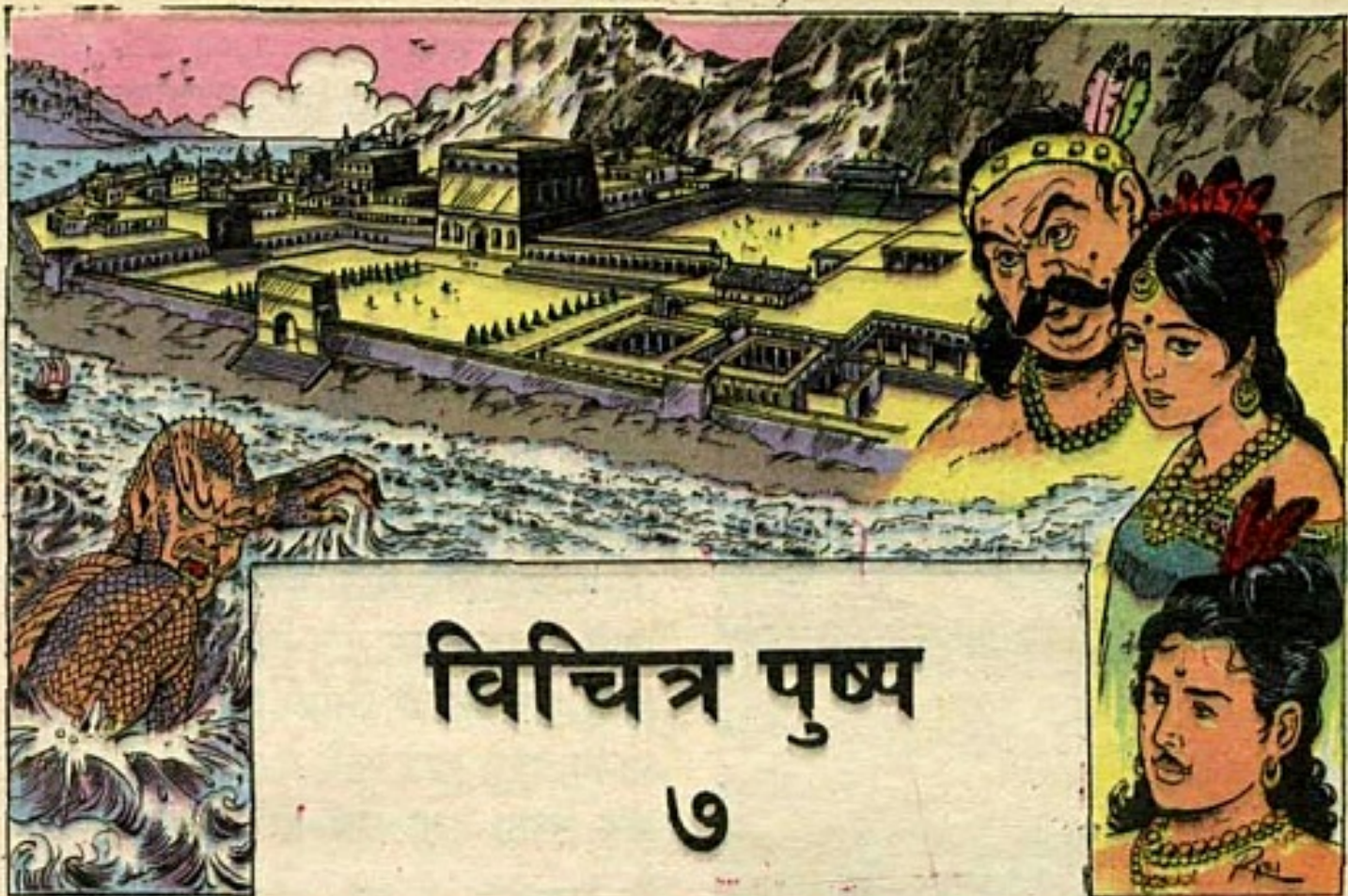
विचित्र पुष्प
७

(राजा प्रतापवर्मा की इच्छा के अनुसार, उत्तुंग अपने मित्रों के साथ जाकर 'शताब्दिका' पुष्प तोड़ ले आया। उस समय तक नाव भी तैयार हो चुकी थी। उत्तुंग जाति का प्रधान शंभु, बहन रजनी और अन्य मित्र उत्तुंग के साथ समुद्र तक आये और उसे विदा किया। राक्षस जंतु को मार डालने समद्र-गर्भ में अकेले ही चल पड़ा उत्तुंग)-बाद

नाव चलाने में उत्तुंग का अनुभव नहीं के बराबर था। पहाड़ों में प्रपात हैं, लेकिन बड़ी-बड़ी नदियाँ नहीं। उन पहाड़ों में तो एक ही नदी है चित्रवाती। तब उसमें बाढ़ आती तो अपने दोस्तों के साथ वह लट्ठों के बेड़े पर जाता। इससे उसे बहुत मज़ा आता था। नाव चलाने की ज़रूरत उसे कभी नहीं हुई। लेकिन आज बीच समुँदर में नाव चलाते हुए उसके साथ था उसका दृढ़ संकल्प-राक्षस जंतु का वध।

उसे इस बात का बिलकुल भय नहीं था कि मुझे अच्छी तरह से नाव चलाना नहीं आता है। उसे याद आती थी केवल राजा को दिया हुआ वँचन। इस वचन को निभाने के लिए अपने प्राणों की बलि देने के लिए भी वह कटिबद्ध था। अपना वचन निभाकर अपनी जाति के गौरव को उन्नत करने का ही उसका लक्ष्य था। समुद्र में थोड़ी दूर

और जाने के बाद लहरों का उछाल कम होता गया । छोटी-छोटी लहरों पर अब नाव तेज़ी से जाने लगी । अब थोड़ी दूर और जाने के बाद नाव ने प्रशांत जल में प्रवेश किया । अब नाव को आगे बढ़ाने के लिए उसने डांड हाथ में लिया और ज़ोर से चलाने लगा ।

धीरे-धीरे अंधेरा फैलने लगा । आकाश मेघों से आच्छादित नहीं था, इसलिए झिलमिलाते हुए तारे दीखने लगे । परंतु कुछ देर बाद हर दिशा में घना अंधकार छा गया । किसी भी क्षण राक्षस जंतु की, किसी भी ओर से पानी से ऊपर आने की संभावना है, इसलिये वह बड़ी ही सावधानी बरतता हुआ नाव चलाने लगा । वह तीक्षण दृष्टि से देखता भी जा रहा था । बहुत दूर जाने के बाद अकस्मात अपने पीछे उसने एक काले आकार को देखा । उत्तुंग ने तुरंत नाव पीछे घुमायी । उसने देखा कि वह काला आकार धीरे-धीरे बृहत रूप धारण करता हुआ उसी की नाव की ओर बढ़ा चला आ रहा है ।उसने ध्यान से देखा कि वह क्या है? मुख तो स्पष्ट नहीं दीख रहा था, लेकिन उसका बड़ा सिर, चौड़ी भुजाएँ तथा बड़े-बड़े हाथों से वह समझ गया कि वह राक्षस जंतु ही है । चलने की उसकी गति से लग रहा था कि इतने गहरे पानी में भी वह लंबे-लंबे पॉव भरता हुआ धीरे-धीरे चला आ रहा है ।

उत्तुंग ने सोचा, बीच समुंदर में राक्षस जंतु का सामना करना दुत्साहस होगा । उसने निश्चय कर लिया कि भूमि का भाग जब तक दिखायी नहीं पड़ेगा, तब तक तेज़ी से वह जाता रहेगा । और किसी भी हालत में तब तक उसकी पकड़ में आना नहीं चाहिये । वह नाव को तेज़ी से चलाता रहा और यह देखता भी गया कि राक्षस जंतु उसके पीछे-पीछे आ रहा है या नहीं? थोड़ी दूर जाने के बाद उसने पथ्थरों का एक बड़ा ढ़ेर देखा । खुश होता हुआ वह चिल्ला उठा, भूमि । इस आनंद में वह समीप पहुँचा, लेकिन वहाँ उतरने के लिए कोई जगह खाली ही नहीं थी । जहाँ-जहाँ ऊँचे-ऊँचे पथ्थर थे, उनपर लहरें तेज़ी से आतीं और उन पथ्थरों से टकराती थीं, जिससे नाव ऊपर

और नीचे झूलने लगी। नाव को काबू में रखने की वह भरसक कोशिश करने लगा। हठात्, एक बहुत बड़ी लहर ने नाव को उठा लिया। दो चट्टानों के बीच में जो तंग जगह थी, उसके द्वारा बाहर फेंक दिया। इस वेग में नाव उथल-पुथल हो गयी। नाव के अंदर जो फूल थे, वे बिखर गये।

पल भर में यह जो आकस्मिक घटना घटी, उससे उत्तुंग का दम घुट गया। पर दूसरे ही पल अपने को उसने संभाला और छिन्नाभिन्न पड़े उन फूलों को इकट्ठा किया। फिर नाव के पास पहुँचा। उसने देखा कि इतने में कई फूल पानी में हिलते हुए चले जा रहे हैं। उसने सोचा कि चूँकि 'शताब्दिका' पुष्प यहाँ है, इसलिए वह राक्षस जंतु अवश्य इस ओर आकर्षित होगा और यहाँ आयेगा। पर यहाँ का मार्ग बहुत ही तंग है। राक्षस जंतु के लिए यहाँ आना सुलभ नहीं है। फिर नाव में जाकर राक्षस जंतु को इस तरफ़ ले आना भी असाध्य कार्य है। क्या करूँ और क्या ना करूँ, यही सोचता हुआ थोड़ी देर वह वहीं खड़ा रहा। बड़ी ही जागरूकता से उसने देखा कि राक्षस जंतु के दिखने के क्या कोई आसार हैं? लेकिन उसका कोई पता ना चला। समय बीतता जा रहा था। पूरब की दिशा में कांति की रेखाएँ दीखने लगीं। उस समय समुद्र में उसे राक्षस जंतु की पीठ दिखायी पड़ी। राजा की बात उसे याद आयी कि सबेरा होते-होते राक्षस जंतु समुद्र के बीच में पहुँच जाता है। उसने निर्णय कर लिया कि फिर रात होने तक उसके समुद्र से बाहर आने की कोई गुंजाइश नहीं है।
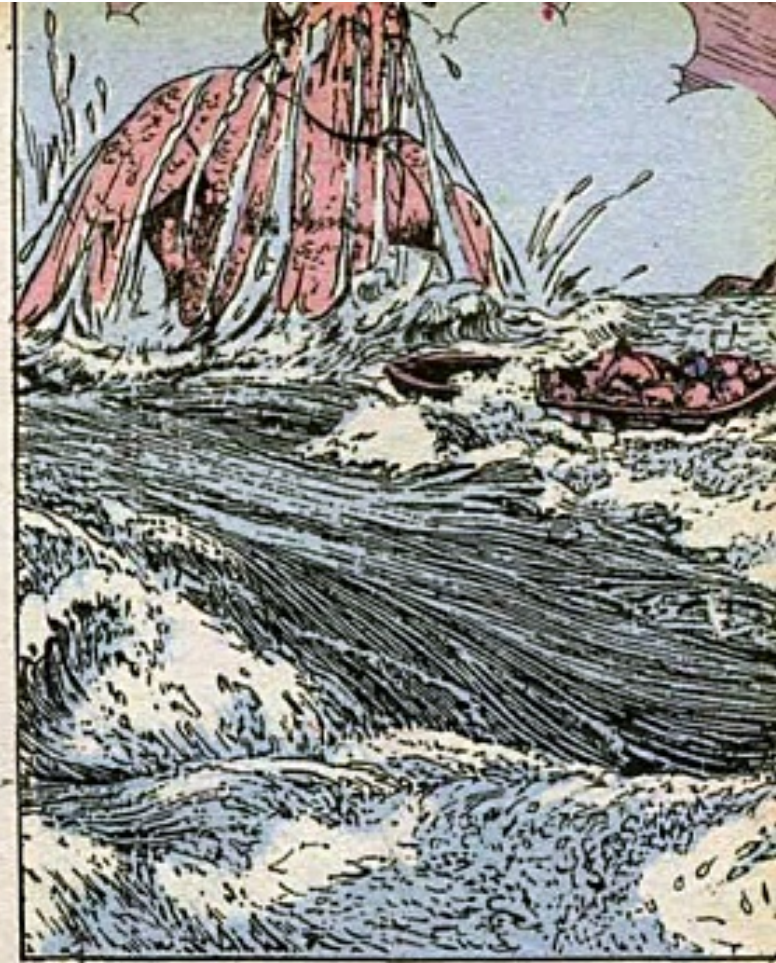
इसके बाद उल्टी पड़ी नाव को अपनी भुजाओं पर उठाकर ठीक रख दी। जिन 'शताब्दिका' पुष्पों और पौधों को चुना था उन्हें फिर से नाव में रख दिया। उन फूलों से सुगंधि यों फैल रही थी, मानों वे अभी-अभी विकसित हुए हों। उन पौधों को रोपने और उन फूलों को छिपाने के लिए वह सही जगह की खोज करने लगा। ईर्द-गिर्द ग़ौर से देखा। तब तक काफ़ी सबेरा हो गया था। वह एक पथ्थर पर बैठकर कुछ देर सोचता रहा। विश्राम लेने उसने

एक झपकी ली । रात भर नाव में सफ़र करने की वजह से थका हुआ उत्तुंग जल्दी ही नींद की गोद में चला गया ।

वह स्वयं नहीं जानता कि वह कितनी देर सोया । सिर के पीछे से आयी औरतों की हँसी की आवाज़ों ने उसे जगा दिया । वह हड़बड़ाता हुआ उठा । उसने यह सोचते हुए पीछे घूमकर देखा कि कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ । छे युवतियों ने आकर उसे घेर लिया । उनकी वेष-भूषाएँ विचित्र हैं । उनकी भाषा भी विचित्र है । रंग-बिरंगे कपड़े पहनी हुई हैं । बालों को और हाथों को उन्होने फूलों से सजा रखा है । उत्तुंग ने सोचा, किसी पहाड़ी जाति के होंगे । लेकिन उनकी बोली उसकी समझ में ही नहीं आयी । सब युवतियों के हाथों में 'शताब्दिका' पुष्प हैं । उनको सूँघते हुए बड़े आनंद से वे आपस में एक दूसरी से बातें कर रही हैं । वह इस इंतज़ार में रहा कि हाथ में रखे हुए पुष्प वहाँ छोड़कर वे कब चली जाएँगी । लेकिन वे जाने का नाम ही नहीं ले रही हैं । उत्तुंग ने यह जान लिया और उनसे कहा "मैं इन फूलों को माणिक्यपुरी से ला रहा हूँ । एक बहुत ही मुख्य कार्य पर उन्हें दूर प्रांत में अपने साथ ले जा रहा हूँ । आप कृपया उन फूलों को नाव में रख दीजिये । सूर्यास्त होते ही मुझे यहाँ से निकलना है ।"

राक्षस जंतु की बात बताकर उन्हें ड़राने का उसकी इच्छा नहीं थी ।

माणिक्यपुरी, माणिक्यपुरी, कहकर दुहराती हुई वे हँसती रहीं, पर कुछ भी बोली नहीं ।

उत्तुंग नाव के पास गया और उनकी ओर देखते हुए बोला "आप लोगों ने उन फूलों को यहाँ से लिया है ना?" हाथ दिखाते हुए उसने उनसे पूछा ।

'हाँ' के भाव में सिर हिलाती रहीं वे युवतियाँ । इशारे से उत्तुंग ने बताया कि तो फिर उन्हें वहीं रख दीजिये ।

अपना सर हिलाती हुई उन युवतियों ने कुछ कहा । उत्तुंग कुछ समझ नहीं पाया वह नाराज़ होता हुआ बोला "वे फूल मेरे हैं । चुपचाप उन्हें वहीं रख दीजिये ।" हाथ हिलाते हुए वह गरजा ।

फिर भी वे फूल की सुगंध को सूँघती
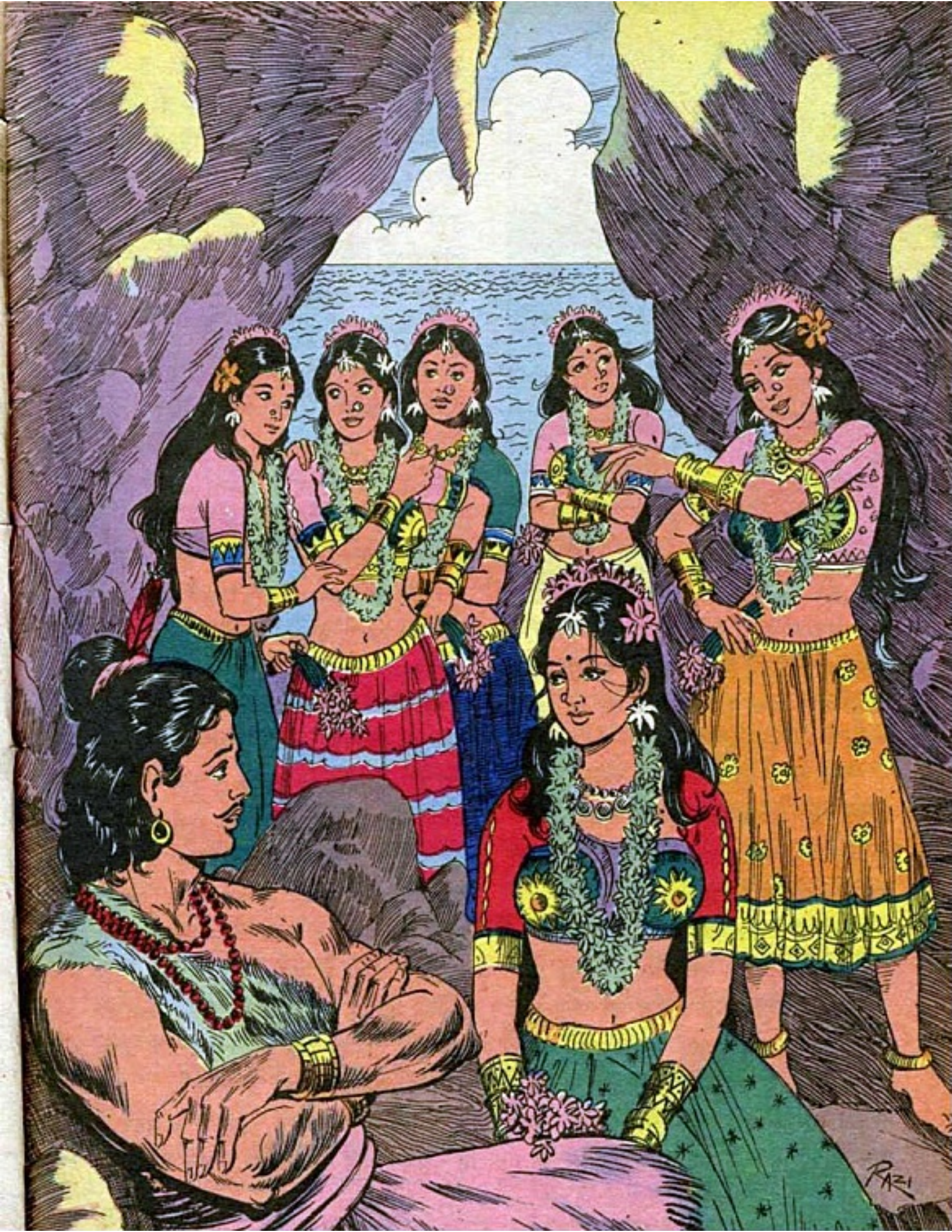
हुई मुस्कुराती ही रहीं । आखिर, उनमें से एक युवती उत्तुंग के पास आयी, उसका स्पर्श किया और हाथ उठाकर उसे दूर की जगह दिखाती हुई कुछ बोली ।

"इन फूलों को लेकर हम अपने घर जा रही हैं, क्या तुम भी आओगे?" उनके संकेतों से यह मतलब निकलता है और उत्तुंग ने इस मतलब को समझ लिया ।

बाक़ी पाँचों युवतियाँ वहाँ से निकल पड़ीं । "अच्छा, ठीक है । आऊँगा, पर एक शर्त पर । जब वहाँ आऊँगा तब मेरे फूल मुझे लौटा दो ।" कहते हुए उनके साथ-साथ चलने के लिये वह तैयार हो गया । जाने के पहले एक बार नाव को देखा । वहाँ एक भी फूल नहीं था । सिर्फ पौधे थे । नाव को वहीं छोड़ने पर हो सकता है, नाव लहरों के बहाव में बह जाए, इसलिए उसे और पीछे ढ़केलकर रख दी । उसने सोचा कि पौधों को वहीं छोड़ना श्रेयस्कर नहीं । उन्हें हाथ में ले लिया और युवतियों की ओर घूमा । वे सब एक जगह रुककर हँसती हुई उत्तुंग की प्रतीक्षा कर रही थीं ।

उत्तुंग जल्दी-जल्दी चलकर उनके पास पहुँचा । उनकी बोली को समझने की कोशिश करता हुआ, मौन होकर उनके पीछे-पीछे जाने लगा । वे युवतियाँ भी कभी-कभी पीछे घूमकर देखतीं कि वह युवक हमारे पीछे-पीछे आ रहा है कि नहीं । यों वे अपने निवास-स्थल की ओर जाने लगीं ।

थोड़ी दूर चलने के बाद उस रेतीले प्रदेश को पार किया । वे अब लाल मिट्टीवाले प्रदेश से गुज़रने लगे । चारों ओर पर्वत श्रेणियों से घिरी हुई वह जगह एक गहरी तश्तरी की तरह दिखायी पड़ी । पेड़-पौधों से हरा भरा है, लेकिन बड़े पेड़ हैं हैं नहीं । थोड़ी दूर और जाने के बाद उसे एक बस्ती दिखायी पड़ी । उनको देखते ही झोंपड़ियों के अंदर से आयी स्त्रीयों ने उन से कुछ पूछा । उनके प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर देकर वे युवतियाँ बस्ती के बीच में स्थित एक बड़ी झोंपड़ी के पास पहुँचीं और 'माँजी, माँजी, कहकर पुकारा । उनकी पुकारें सुनकर एक प्रौढ़ा दरवाज़ा खोलकर बाहर आयी ।

"देखो, हम क्या ले आयी हैं । सुँदर हैं ना" कहती हुई एक युवती ने एक फूल उस

स्त्री को दिखाया ।

"बहुत ही सुँदर है । बड़ी अच्छी सुगंध भी आ रही है । कहाँ से लायी हो?" उस स्त्री ने पूछा ।

"हम लोग समुद्री तट पर गयी थीं । उस युवक को हमने सोते हुए देखा । उसके बग़ल में एक नाव थी और उस नाव में ये फूल मिले । हमने सोचा कि वे हमारे लिये ही लाया है, इसलिए हमने इन्हें लिया है । लगता है, वह माणिक्यपुरी से आया हुआ है । उसने अपनी भाषा में कुछ कहा । लेकिन उसकी बातें हमारी समझ में नहीं आयीं । उसे अपने साथ ले आयी हैं । वह देखने में बहुत सुँदर लग रहा है ना?" एक युवती ने कहा ।

कहती हुई उस युवती ने उत्तुंग को दिखाया । "हाँ, हाँ, बहुत ही सुँदर है । उससे बातें करके मैं विवरण जान लूँगी । तुम लोग अब अंदर जाओ" उस प्रौढ़ा ने कहा ।

सब युवतियाँ एक के बाद एक झोंपड़ी के अंदर चली गयीं । उस स्त्री ने उत्तुंग को इशारे से कहा, बैठ जाओ । फिर वह अंदर गयी ।

उनकी बातें उत्तुंग की समझ में नहीं आयीं । उस झोंपड़ी को देखकर उत्तुंग ने अनुमान लगाया कि यह झोंपड़ी इस बस्ती के प्रधान की होगी । जो स्त्री अंदर गयी थी, अब बाहर आयी । उसके हाथ में एक थाली थी, जिसमें खाने और पीने के पदार्थ भरे हुए थे । वह उत्तुंग के पास आयी और बोली "बहुत थके हुए लगते हो । यह खाओ और पीओ । काबुई के आने के बाद बातें करते हुए भोजन करो ।"

उत्तुंग ने थाली में से एक बरतन लिया और पानी पिया । फिर बरतन बग़ल में रख दिया । पास ही के खंभे से लगकर वह बैठ गया और उन 'शताब्दिका' पुष्पों के बारे में सोचने लग गया, जिन्हें युवतियाँ अपने साथ अंदर ले गयी थीं । वह सोचने लगा "इन 'शताब्दिका' पुष्पों से आकर्षित होकर वह राक्षस जंतु अगर यहाँ आ जाए तो क्या किया जाए? फिर सोचा, समुद्री तट पर बड़े-बड़े पथ्थर हैं । वे दीवार की तरह रुकावट बने हुए हैं । उन पथ्थरों को पारकर राक्षस जंतु के इस तरफ़ आने की कम गुँजाइश है । पथ्थरों के बीच में केवल एक तंग रास्ता

है। उस रास्ते से राक्षस जंतु आ नहीं पायेगा। जब नाव उल्टी हो गयी तब कुछ फूल पानी में गिर गये। उन्हीं से वह जंतु शायद संतृप्त हो जाए। अगर ज़रूरत पड़े तो क्या यहाँ के लोग मेरी सहायता करने सन्नद्ध होंगे?"

जब किसी ने उसकी पीठ ज़ोर-ज़ोर से थपथपायी तो उत्तुंग ने अपनी सोच से चौंककर सिर घुमाकर देखा।

सामने खड़े एक दृढ़ शरीरवाले ने उससे पूछा "तुम कौन हो?"

उसका सवाल उत्तुंग की समझ में नहीं आया। फिर भी उसने कहा "माणिक्यपुरी राज्य के श्रृंगमाय पर्वतों से आया हूँ। मेरा नाम उत्तुंग है।"

"श्रृंगमाय पर्वतों से आ रहे हो? सुनकर बहुत आनंद हुआ। चलो, अंदर चलते हैं।" कहते हुए वह उसे अंदर ले गया।

जब उत्तुंग को मालूम हुआ कि वह उसकी भाषा जानता है तो उसे बड़ी खुशी हुई।

लेकिन यह आनंद उसके मुखमंडल पर क्षण भर के लिए था। क्योंकि वह इस सोच में पड़ गया कि मालूम नहीं, ये लोग कौन हैं और मेरे साथ कैसा बरताव करेंगे? वह सोचने लगा, ये लोग मुझे बंदी बना दें तो मैं अपने लक्ष्य को कैसे साध पाऊँगा। इनसे अकेले मैं कैसे लड़ पाऊँगा। इनके चंगुल से मैं कैसे बच पाऊँगा। अगर मैं छोड़ भी दिया गया तो भी कैसे विश्वास करूँ कि वे 'शताब्दिका' फूल मुझे लौटाएँगे! अगर नहीं लौटाया तो किस मुँह से वापस जाऊँगा? प्रधान शंभु तथा राजा को क्या समाधान दूँगा? इस बीच पुष्पों की सुगंधि से आकर्षित होकर राक्षस जंतु यहाँ आ जाए तो क्या उसका मुक़ाबला कर पायेंगे? ये लोग इस काम में मेरी सहायता करेंगे या भय से भाग जाएँगे? दुख की बात तो यही है कि मेरे कारण ये लोग भी विपत्ति में फँस जायेंगे। राक्षस जंतु के बारे में मैं इनसे कहूँ कि नहीं। यही सोचते हुए वह युवक के साथ झोंपड़ी के अंदर गया।

(सशेष)
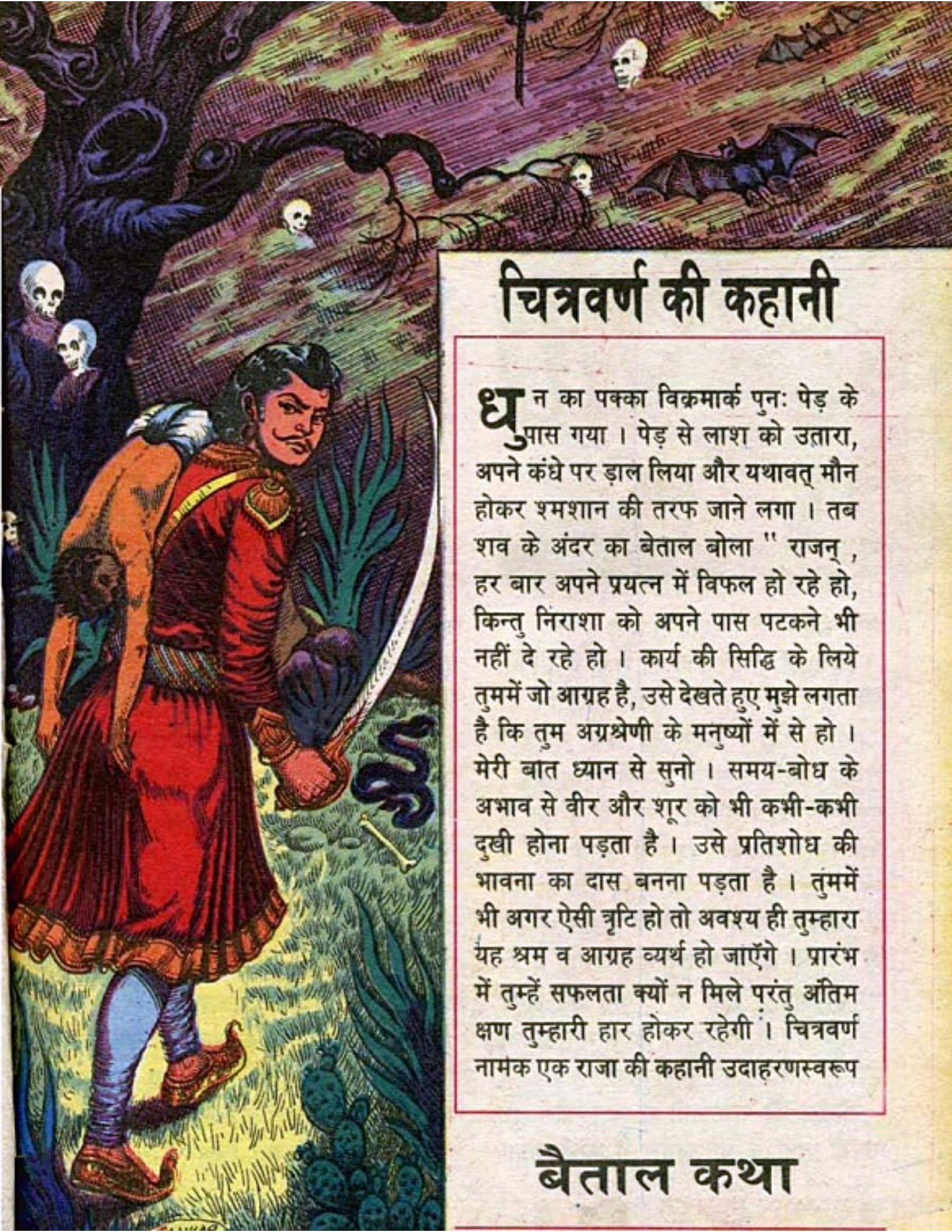
चित्रवर्ण की कहानी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया । पेड़ से लाश को उतारा, अपने कंधे पर ड़ाल लिया और यथावत् मौन होकर श्मशान की तरफ जाने लगा । तब शव के अंदर का बेताल बोला " राजन् , हर बार अपने प्रयत्न में विफल हो रहे हो, किन्तु निराशा को अपने पास पटकने भी नहीं दे रहे हो । कार्य की सिद्धि के लिये तुममें जो आग्रह है, उसे देखते हुए मुझे लगता है कि तुम अग्रश्रेणी के मनुष्यों में से हो । मेरी बात ध्यान से सुनो । समय-बोध के अभाव से वीर और शूर को भी कभी-कभी दुखी होना पड़ता है । उसे प्रतिशोध की भावना का दास बनना पड़ता है । तुममें भी अगर ऐसी त्रुटि हो तो अवश्य ही तुम्हारा यह श्रम व आग्रह व्यर्थ हो जाएँगे । प्रारंभ में तुम्हें सफलता क्यों न मिले परंतु अंतिम क्षण तुम्हारी हार होकर रहेगी । चित्रवर्ण नामक एक राजा की कहानी उदाहरणस्वरूप

बैताल कथा

तुम्हें सुनाता हूँ । ध्यान से सुनो ।"

चित्रवर्ण सौनीर देश का राजा है । पिता की मृत्यु के बाद वह राज- सिंहासन पर आसीन हुआ । बहुत ही कम समय में समर्थ शासक के रूप में उसकी प्रशंसा हुई । पम्दगिरि की राजकुमारी रागिणी ने एक ही वर्ष पहले स्वयंवर-मंडप में उसके गले में माला पहनायी और उसे अपने पति के रूप में स्वीकार किया । रागिणी केवल सुँन्दरी ही नहीं थी बल्कि राजनीतिक विषयों में भी उसका अच्छा ज्ञान था । पति को अगर शासन-संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा तो सलाह देकर उन्हें सुलझाती ।

सौनीर की राजधानी से चार कोस दूर पहाड़ी प्रांतों के घने जंगल में काली माता का बहुत ही प्राचीन मंदिर है । शायद राजा के धैर्य - साहस की परीक्षा के लिये एक प्रथा चली आ रही है, जिसके अनुसार राजा को वर्ष में एक बार उस देवी की पूजा के लिये वहाँ अकेले आना अनिवार्य है ।

इस प्रथा की पूर्ति के लिये चित्रवर्ण अकेले घोड़े पर बैठकर मंदिर की ओर चल पड़ा । जब जंगल से वह गुज़र रहा था और मंदिर के निकट पहुँचनेवाला ही था, तब उसने वृक्षों के पीछे से स्त्री का आर्तनाद सुना ।

राजा ने तुरंत घोड़े को घुमाया और उस तरफ़ निकल पड़ा , जहाँ से उसे आर्तनाद सुनायी पड़ा । वहाँ पहुँचने के बाद उसने देखा कि एक राक्षस एक वन-वनिता को निगल जाने का प्रयत्न कर रहा था । चित्रवर्ण फ़ौरन घोड़े से उतरा और म्यान से अपनी तलवार निकाली । गरजते हुए उसने कहा " अरे ओ राक्षस , तुम में साहस हो तो आओ और मुझसे लड़कर जीतो । फिर मुझे निगल लो । अबला को खा जाना साहस नहीं कहलाता । यह कार्य तो बड़ा ही नीच कार्य है " ।

राक्षस ने चित्रवर्ण को बड़ी विचित्रता से देखा और बोला " तुम मुझसे लड़ोगे ? क्या तुम इतने बड़े वीर हो कि मुझ पर विजय पा लोगे ? छी, बंद करो बकवास " ।

क्रोधित होता हुआ चित्रवर्ण राक्षस के समीप आया । ठठाकर हँसते हुए राक्षस ने वन-वनिता को नीचे डाल दिया और आँखें फाड़ते हुए, गुर्राते हुए चित्रवर्ण से कहा

" सावधान , भागने की व्यर्थ कोशिश मत करना । तुम एक साधारण इन्सान हो । मैं हूँ बड़ा राक्षस । राक्षसों में भी मैं अग्रजाति का हूँ । जब हम भूखे होते हैं तभी धर्म के रास्ते से हटते हैं । अथवा हम सदा धर्म का आचरण करते हैं । हम समान होते तो इस युद्ध में मज़ा आता । पर तुममें और मुझमें समानता ही कहाँ है? तुम तो मेरे सामने कुछ भी नही के बराबर हो" कहते हुए उसने अपने आकार को छोटा कर लिया ।

चित्रवर्ण जब यह देखकर चकित हो रहा था तब राक्षस ने हँसते हुए कहा " मैं तो अब एक तलवार की भी सृष्टि नहीं कर सकता क्योंकि इस समय मुझे मंत्र का स्मरण नहीं हो रहा है । इसलिए हम दोनों तलवार से युद्ध नहीं करेगें , मल्ल युद्ध करेंगे । अपनी तलवार फेंक दो " ।

राक्षस के कहे मुताबिक़ चित्रवर्ण ने अपनी तलवार नीचे फेंक दी और राक्षस से मल्लयुद्ध करने उसपर टूट पड़ा । कुछ समय तक दोनों में लड़ाई होती रही । यद्यपि राक्षस में शारीरिक वल अत्यधिक मात्रा में था , परंतु यद्ध - कला में वह कमज़ोर था । इसलिए वह जल्दी ही थक गया । चित्रवर्ण ने उसकी यह कमज़ोरी भाँप ली और उस राक्षस की छाती और गले पर ज़ोर- ज़ोर से कठोर मुक्के मारने लग गया ।

पीड़ा से आर्तनाद करता हुआ राक्षस नीचे गिर पड़ा और यह कहते हुए अदृश्य हो गया "तुम सिर्फ धैर्यशाली ही नहीं बल्कि बलशाली भी हो" ।

वन-वनिता तुरंत राजा के पैरों पर पड़ी और बोली "महाशय, गिरिका मेरा नाम है । वन प्रमुख की बेटी हूँ । जंगली चमेली पुष्पों के लिये आयी तो इस राक्षस ने मुझे पकड़ लिया । आपने मेरी रक्षा की है । राक्षस का सामना करके उसे आसानी से हरा देनेवाले आप जैसे शूर संसार मे ढूँढने पर भी नहीं मिलेंगे " ।

राजा ने मुस्कुराते हुए उसे उठाया । गले में पहनी गुरिया की मालाओं से सुसज्जित, सिर पर लगे रंग बिरंगे पक्षियों के पंखों से अलंकृत वह युवती वनदेवी लग रही थी । राजा ने उसे सिर से पैर तक बड़ी हीं तीक्षणता से देखा । उस अद्भुत-सौंदर्य पर लट्टू हो

गया ।

कुछ क्षणों तक चित्रवर्ण उस सुँदरी को देखता ही रहा । फिर अपनी दृष्टि उसकी तरफ़ से फेर ली और काली माँ के मँदिर की तरफ निकलते हुए बोला " गिरिका , मैं माँ काली की पूजा करने आया हुँ । अब तुम अपनी बस्ती चली जाओ ।"

राजा के कहने पर भी वह अपने यहाँ नहीं गयी । राजा के पीछे-पीछे मँदिर में आयी और उसके साथ-साथ उसने भी काली माँ की पूजा की । राजा बाहर आया और अपने घोड़े की तरफ बढ़ने लगा । वह भी उसके साथ-साथ चली आयी ;

चित्रवर्ण ताड़ गया कि गिरिका कुछ बताने से हिचकिचा रही है तो उससे राजा ने पूछा "लगता है , तुम्हारे मन में कोई संघर्ष चल रहा है । निर्भीक होकर बताओ । मैं इस देश का राजा चित्रवर्ण हूँ " ।

यह सुनकर गिरिका थोड़े क्षणों के लिये स्तब्ध रह गयी । फिर होश में आती हुई बोली " अब तक मैं समझ नहीं पायी कि आप महाराज हैं । मैं तो नहीं जानती कि आपने उस काली देवी से क्या माँगा है, पर मैने तो माँगा है आपको अपने पति के रूप में" । उसके स्वर में निराशा भरी हुई थी ।

राजा क्षण भर के लिये निश्चेष्ट रह गया । अपने को संभालते हुए कुछ कहने ही वाला था कि इतने में वहाँ एक वन-युवक आया और कहा "गिरिका, तुम यहाँ हो ? तुम्हारे लिये मैने कहाँ-कहाँ नही ढूँढ़ा" । उसके सुर में आतुरता थी ।

गिरिका ने उस युवक से जो हुआ , सब बताया और बोली "इन्होने ही मुझे राक्षस से बचाया है , ये हमारे देश के महाराजा चित्रवर्ण हैं ।"

युवक ने राजा को प्रणाम करते हुए कहा "महाराज, आपने गिरिका की रक्षा करके मुझपर बड़ा उपकार किया है । राक्षस अगर गिरिका को खा जाता तो मैं आत्महत्या कर लेता । सच मानिये, गिरिका के बिना एक क्षण भी मैं जीवित नहीं रह सकता" ।

मुस्कुराते हुए राजा ने कहा " अच्छा , तो यह बात है । गिरिका से तुम्हारे प्रेम की बात तो मैने अभी-अभी सुनी है , पर वह तो मुझसे अपने प्राण से भी अधिक प्रेम

करती है" ।

बड़े ही नीरस स्वर में युवक ने पूछा "गिरिका , क्या यह सच है ?"

गिरिका ने 'हाँ' कहा । राजा ने एक लंबी साँस ली और उस वन-युवक से कहा "इस समस्या को सुलझाने का एक ही मार्ग है । हाँ, यह तो सच है कि मैने राक्षस को हराया है , पर तुम्हें नहीं । अगर तुम मल्लयुद्ध में मुझे हरा पाओगे तो गिरिका तुम्हारी हो जाएगी" ।

इसपर युवक को आनंद हुआ और उसने अपनी स्वीकृति दी ।

राजा ने गिरिका से पूछा "तुम्हे मंज़ूर है ना?" गिरिका ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाया । दूसरे ही क्षण राजा और वनयुवक के बीच में लड़ाई का प्रारंभ हो गया । चार पाँच मिनिटों के अंदर युवक ने राजा के पेट में दो-तीन ज़बरदस्त मुक्के मारे । राजा ने एक चीख़ मारी और होश खो कर नीचे गिर पड़ा ।

थोड़ी देर में चित्रवर्ण होश में आया और उठ खड़ा हुआ । "गिरिका , मैं हार गया हूँ । तुम अपने साजन से शादी करके सुखी रहो ।" राजा ने कहा और घोड़े पर चढ़ कर तुरंत चला गया ।

इस घटना के घटने के कुछ समय बाद राजा चित्रवर्ण के जन्म-दिन के अवसर पर राजधानी में युद्ध-कला संबंधी तरह-तरह की स्पर्धाएँ संपन्न हुईं । घोषित किया गया कि विजेताओं को बहुमुल्य पुरस्कार प्रदान किये जाएँगे । स्पर्धाओं के आख़िरी दिन मल्लयुद्ध में गिरिका का साजन विजेता

घोषित हुआ । उसने राजस्थान के सब मल्लयुद्ध के वीरों को हरा दिया । युवक को पुरस्कार प्रदान करना था राजा को , परंतु आश्चर्य कि राजा स्वयं उससे मल्लयुद्ध करने सन्नद्ध हो गया ।

राजा के व्यवहार पर केवल वहाँ उपस्थित जनता ही नहीं बल्कि वहाँ आयी हुई गिरिका को भी बहुत ही आश्चर्य हुआ । गिरिका को संपूर्ण विश्वास था कि इस युद्ध में उसके साजन की ही जीत होगी, इसलिये बड़ी ही उत्सुकता से देखने लगी ।परंतु चित्रवर्ण के कला - कौशल तथा शक्ति - सामर्थ्य के सन्मुख युवक टिक नहीं पाया । क्षणों में राजा ने युवक की ऐसी तैसी कर दी ।

बेताल ने पूरी कहानी सुनाने के बाद राजा से कहा "राजन् , वन-वनिता गिरिका के विषय में चित्रवर्ण के बरताव को देखते हुए क्या ऐसा नहीं लगता कि उसमें समय-बोध शून्य है और वह चचंल बुद्धि का है । पहले गिरिका के सौंदर्य पर वह मुग्ध हुआ , इसी वजह से गिरिका पर ही उसकी दृष्टि केन्द्रित रही । इससे विदित होता है कि उसमें गिरिका से विवाह करने की प्रबल इच्छा थी । किन्तु जब युवक ने गिरिका से अपने प्रेम का रहस्य खोला तो उसने अपना इरादा बदल लिया । अब रही उसकी वीरता की बात । राक्षस ने जब मल्लयुद्ध के लिये राजा को आह्वान दिया तब उसने अपने आकार को छोटा कर लिया , क्योंकि यह न्यायसंगत था । अगर वह ऐसा ना करता तो राजा उसे मल्लयुद्ध में हरा ना पाता । सबसे बढ़कर राजा के चंचल स्वभाव का उदाहरण है, युवक से मल्लयुद्ध लड़ने का राजा का निर्णय । यह निर्णय उसने लिया आखिर में, जब कि सब के सब युवक उस के हाथों में हार चुके थे । क्या युवक को हराने का राजा का यह प्रयास प्रमाणित नहीं करता कि राजा के हृदय में उस युवक के प्रति प्रतिशोध और ईर्ष्या की भावना थी ? मेरे इन संदेहों का उत्तर जान-बूझकर भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सर फट जायेगा"

विक्रमार्क ने कहा "जब से चित्रवर्ण जंगल में वन-वनिता से मिला और उससे परिचित हुआ तब से जो-जो घटनाएँ घटी हैं, उन्हें

अलग-अलग भागों में विभाजित नहीं करना चाहिये। बल्कि उन्हें एक सूत्र में बाँधकर सोचना अच्छा होगा। राक्षस का शरीर पर्वत के समान था। इस आकार को देखकर भी राजा उससे भयभीत नहीं हुआ। तलवार लेकर उसपर टूट पड़ा। इससे यह स्पष्ट साबित होता है कि नित्संदेह ही वह वीर था। राक्षस ने अपने आकार को लघु बनाया, यह तो केवल उसके धर्मसूत्र से संबंधित विषय है, जिस पर उसका विश्वास था। राजा ने एक अद्भुत सुँदरी को देखा अवश्य, परंतु यह कहना असंगत है कि राजा उससे विवाह रचाना चाहता था। अगर ऐसी इच्छा होती तो राजा वन-युवक को मल्लयुद्ध में हराता और गिरिका से शादी करता।

गिरिका के प्रेम को तोड़ने के लिये ही राजा युवक के हाथों में हार गया।

राजा जान गया कि गिरिका उसकी शूरता पर मुग्ध हैं और वह उसकी पत्नी बनने के लिए उतावली है। उसके बाद स्पर्धाओं में उस वान-युवक को आसानी से हराना राजतंत्र का एक अभिन्न अंग है। अगर राजा ऐसा ना करके वन-युवक को पुरस्कार प्रदान करता तो कभी ना कभी वह यह कहकर अवश्य प्रचार करता कि मैंनें जंगल में राजा को बुरी तरह से हराया है। भला एक राजा के लिये इससे बढ़कर अपमान क्या हो सकता है? इसीलिये चित्रवर्ण ने सब की उपस्थिति में उस युवक को हराया। अब युवक को ऐसे झूठे प्रचार करने का मौका ही नहीं है। इस वास्तविकता को दृष्टि में रखने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि चित्रवर्ण को समय का बोध है, वह दृढ़ स्वभाव का है, महाशूर है! उसमें व्यक्तिगत ईर्ष्या अथवा प्रतिशोध की भावना कदापि नहीं है।"

इस प्रकार राजा का मौन भंग करने में बेताल सफल हुआ। वह तक्षण शव को लेकर गायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार - आर.बी. राजु की रचना

सौ फ़ी सदी सच

विस्तापुर का ज़मींदार राम ठाकुर उतना समझदार आदमी नहीं था । वह एक दिन अपने मित्र भूपाल ठाकुर के साथ शतरंज खेल रहा था । तब वहाँ एक आदमी आया और बोला, "मालिक, मैं महावत हूँ । मेरे पास एक हाथी है । आजकल उससे मेरी आमदनी बहुत ही कम हो गयी है, उल्टे उसपर ज़्यादा खर्च हो रहा है । आप जैसे रईस को उसे बेचना चाहता हूँ ।"

राम ठाकुर ने अपने मित्र की तरफ यों देखा, मानों वह पूछना चाहता है कि क्या करूँ?

भूपाल ने कहा "तो फिर देरी क्यों? कहते हैं ना हाथी ज़िन्दा हो तो भी सवा लाख का और मैरा भी तो सवा लाख का ।"

"तुम्हारा मतलब क्या है? "राम ठाकुर ने पूछा । "हाथी जब ज़िन्दा है तब हमारे अनेकों कामों में उपयोग में आता है । मरने पर उसके दाँत भी बेच दें तो हमें फ़ायदा ही होगा" भूपाल ने कहा ।

राम ठाकुर ने हाथी खरीद लिया । कुछ समय गुज़रा । एक दिन भूपाल, राम ठाकुर को देखने आया । उस समय कुछ लोग मरे हाथी को क़िले से बाहर खींचकर ले जा रहे थे ।

राम ठाकुर अपने मित्र भूपाल को हाथी दिखाता हुआ बोला "तुमने मुझसे पहले ही क्यों नहीं कहा कि स्त्री हाथी के दाँत नहीं होते । हाँ, तुम्हारी बातें सौ फ़ीसदी सच निकलीं । तुमने कहा था ना कि हाथ ज़िन्दा हो तो सवा लाख का या मरा भी तो सवा लाख का । इसको पालने में और मरने के बाद इसको गाड़ने में सवा लाख तो हो ही गया होगा ।" आँसू पोंछते हुए उसने कहा ।

—वी. किशोर
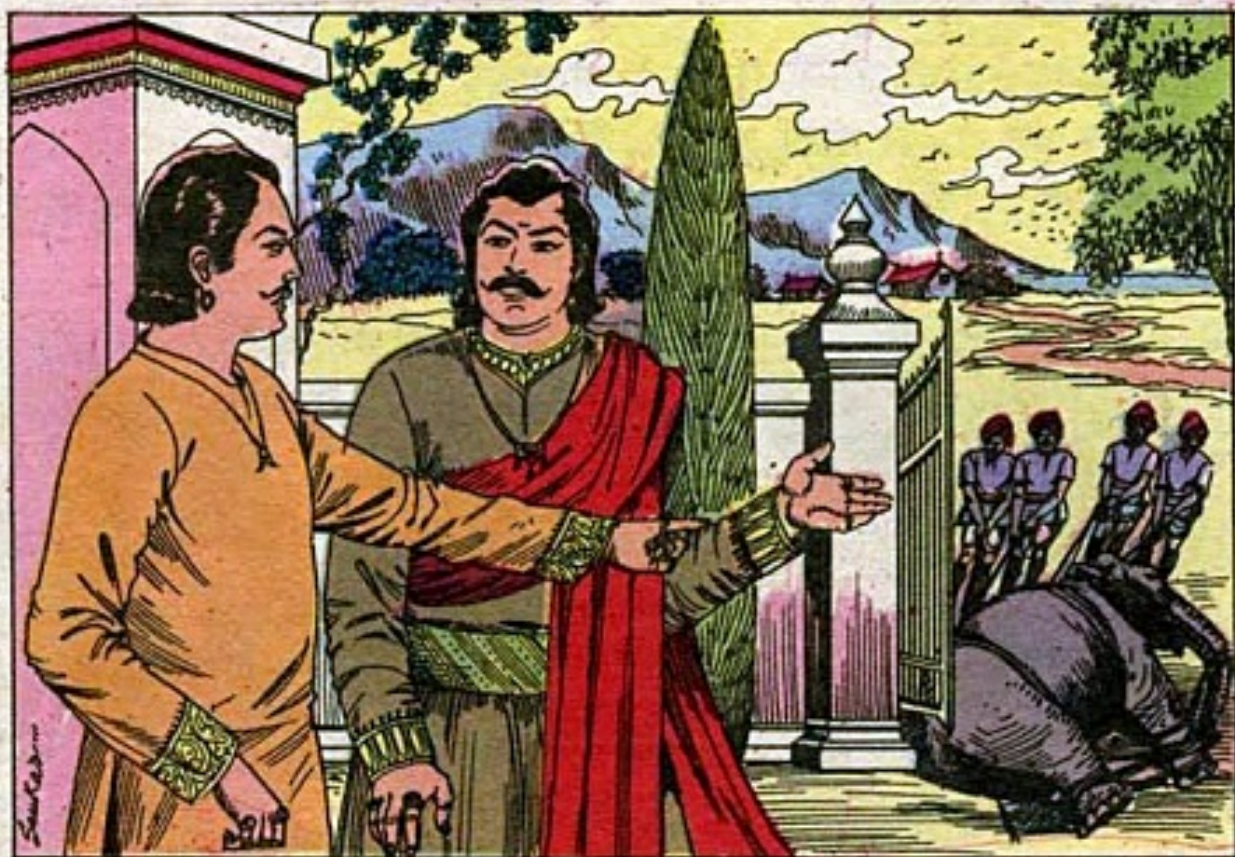
चन्दामामा परिशिष्ट-६०

हमारे देश के पशु-पक्षी

चमरी मृग

पहाड़ों में रहनेवाले चमरी मृगों को (याक) चमरी गाय कहकर बुला सकते हैं.। ये पशु जाति के हैं । कश्मीर से सिक्किम तक की हिमालय की तराइयों में ये अधिकतर पाये जाते हैं ।

ये परिमाण में मामूली गायों से बड़ी होती हैं और काफ़ी मज़बूत भी । साधारणतया ये १७० से १८५ सें. मी तक की ऊँचाई तक बढ़ती हैं । बड़ी आसानी से पहाड़ों पर चढ़ती हैं । ये समुद्री सतह से ४,३००-६००० मीटरों की ऊँचाई पर रहती हैं । इनके काले शरीर भर घने लंबे बाल होते हैं । इन बालों की वजह से वे कड़ी सी कड़ी सर्दी को भी सह पाती हैं ।

एक ज़माना था, जब कि ये जंगलों में रहा करती थीं । परंतु अब दूध के लिए ये घरों में भी पाली जा रही हैं । बोझ ढोने और चढ़कर सफ़र करने के काम में भी ये उपयोग में लायी जा रही हैं ।

मिल-जुलकर रहने का इनका स्वभाव है । ये झुंडों में दीखती हैं । गाय और चमरमृगों के मिलन के कारण मिश्रित चमरमृग भी कहीं -कहीं देखे जा सकते हैं । इन्हें 'मेथ्यून' कहकर पुकारते हैं ।

अवनींद्रनाथ टागौर

"मनोहर प्राकृतिक दृश्यों का चित्रांकन करने के लिए आप को किसी बगीचे में जाते हुए, अथवा किसी नदी के किनारे बैठकर वहाँ के पेड़-पौधों और पुष्पों का यथावत् चित्रण करते हुए मैने आपको देखा है । मैने देखा है कि आप इस समय ध्यान-मग्न होते हैं । प्रकृति के सौंदर्य को इतनी सुगमता से पकड़कर उसेअपने चित्रण में चित्रित करने की आपकी चेष्टा मुझे आश्चर्य में डुबो देती है । सौंदर्य केवल बाह्य नहीं होता । आपको भली-भाँति समझना चाहिये कि वह हृदय के अंतराल में छिपा होता है । महकवि कालिदास की कविताओं से आप अपने हृदयों को आनंदित कीजिये, और फिर आकाश की ओर निहारिये । तब आप देख पायेंगे गगन में झूमते हुए, झूलते हुए मेघों का अमर संदेश । आदिकवि वाल्मीकी ने समुद्र का जो विस्तृत वर्णन किया, उन्हें पहले पढ़िये, उनका आनंद लीजिये और फिर समुद्र का जो वर्णन आप करना चाहते हैं, कीजिये ।"

प्रमुख चित्रकार अवनींद्रनाथ टागौर ने अपने शिष्यों को उक्त सलाहें दी थीं । ये सलाहें इस बात

के द्योतक हैं कि चित्रकला के प्रति उनके क्या विचार हैं ।

उनका विचार था कि जब हम अपनी सांस्कृतिक संपदा व विरासत को समझ कर, उसका मनन करके आस्वादन करेंगे तब हमसे चित्रित चित्रों में सजीवता आ पायेगी । विश्वकवि रवींद्रनाथ टागौर के भाई के पुत्र हैं अवनींद्र टागौर । टागौर का परिवार विश्व में व्याप्त विविध कलाओं के प्रमुखों को जब अपनी कलात्मक कृतियों के द्वारा आकर्षित कर रहा था तब उस अवधि में याने १८७१ में अवनींद्रनाथ

टागौर का जन्म हुआ । वे अपनी प्रथम दशा में अंग्रेज़ व इटली के चित्रकारों से प्रभावित हुए । पाश्चात्य कला का अनुकरण करने का उन्होने प्रयत्न किया । भारतीय कला-संपदा के महत्व को केवल शेष विश्व ही ने नहीं, बल्कि भारतीयों ने भी समझा व और उसे गौरव दिया । इसका सारा श्रेय कला समीक्षाकार श्री हेच बी. हावल को जाता है । हावल से अवनींद्र का परिचय हुआ । तब से अवनींद्र ने भारतीय चित्रकला की विशिष्टताओं को जाना और पहचाना । उन्होंने और समृद्ध बनाने के काम में अपनी प्रतिभा व कौशल का उपयोग किया । यद्यपि उन्होने

पाश्चात्य चित्रकारों की शैली ही अपनांयी, परंतु भारतीय परंपराओं की विशेषताओं को ही अपने चित्रों का प्रधान अंश बनाया ।

उन्होंने 'इंडियन सोसायटी आफ ओरियंटल आर्ट' नामक एक संस्था की स्थापना की । कितने ही चित्रकारों ने उनसे प्रेरणा पायी । उनमें से नंदलाल बोस मुख्य हैं ।

१९५१ में अवनींद्रनाथ टागौर परलोक सिधारे ।

क्या तुम जानते हो?

१. हमरे देश में राष्ट्रों का पुनर्गठन कब हुआ?

२. वह देश कौन-सा है, जहाँ पिछले दस सालों से अणु आयुध नहीं हैं?

३. 'पंचतंत्र' की कहानियाँ किस राजा के काल में संकलित हुई?

४. 'प्रकृति संसार निधि' ने किस जंतु को अपने चिन्ह के रूप में स्वीकार किया है?

५. हमारे देश में रेल गाड़ियों को बनाने का कारखाना कहाँ है?

६. वह कौन-सी सवारी है, जो वातावरण को बहुत ही कम दूषित करती है?

७. किस राष्ट्र में अधिकाधिक कोयले की खानें हैं?

८. 'ब्लू चिप' क्या है?

९. 'देवेंद्र' की राजधानी का नाम क्या है?

१०. अयोतुल्ला खोमानी ने ईरान में शासन कब अपने हाथ में लिया?

११. हमारे देश में सौ साल से भी पहले से प्रकाशित पत्रिकाएँ कितनी हैं?

१२. 'क्विट इंडिया' की घोषणा कब हुई?

१३. देवनागरी लिपि में सिक्कों को पहले-पहले किस मुस्लिम बादशाह ने निकाला?

१४. 'हरी क्रांति' हमारे देश की किस मुख्य फ़सल को सूचित करता है?

१५. सबसे बड़ा ग्रह कौन-सा है?

उत्तर

१. १९५६ में

२. न्यूज़िलांड

३. चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में

४. पांदा(जंगली रीछ)

५. मद्रास के पेरंबूर में

६. साइकिल

७. बिहार

८. सक्रम रूप में प्रगति करता हुआ बड़ी कंपनी का 'षेर'

९. अमरावती

१०. १९७९ में

११. ३६

१२. १९४२, अगस्त, ८

१३. शेरशाह

१४. गेहूँ

१५. गुरुग्रह (भूमि से ग्यारह गुना बड़ा)

कार्यसाधक

ज़मींदार श्रीकंठ को एक ऐसे योग्य व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो ज़मींदारी के कृषि-संबंधी कार्यों का पर्यवेक्षण करे। इसके साथ ही उसे ख़ज़ाने में आते-जाते लोगों पर भी ध्यान रखना होगा। वह जिम्मेदारियों और सकल मर्यादाओं के साथ पेश आनेवाला समर्थ व सुयोग्य व्यक्ति हो। नारायण आज तक इस कार्य को बड़ी दक्षता के साथ निभाता रहा। परंतु उसकी आकस्मिक मृत्यु हो जाने से ज़मींदार के सामने अकस्मात यह समस्या आ खड़ी हो गयी।

इसके बारे में उन्होने अपने दीवान से सविस्तार चर्चा की। दीवान ने क्षण भर सोचकर कहा "महोदय, मेरा विश्वास है कि नारायण का बेटा शशांक इस काम के लिए योग्य प्रमाणित होगा।

दूसरे ही दिन शशांक ज़मींदार से मिला। उसने ज़मींदार से प्रार्थना की कि अपने पिता का स्थान उसे दिया जाए। ज़मींदार निर्णय कर चुका था कि शशांक को यह स्थान उसकी अक़्लमंदी और कार्यदक्षता के आधार पर ही प्राप्त हो सकेगा। इसलिए दो दिनों के बाद उसे फिर से आने को कहा।

ज़मींदार के कहे मुताबिक़ शशांक दो दिनों के बाद फिर से उससे मिलने आया।

ज़मींदार ने उससे कहा "तुम्हें नौकरी देने की बात मैं बाद सोचूँगा। उसके पहले तुम्हें एक काम करना होगा। आज शाम को मेरी बेटी अपने ससुराल जा रही है। मैंने शहर के एक जौहरी को कीमती गहना बनाने का काम सौंपा था। गहना बनाकर हमें सौंपा भी गया है। उसे देखकर मेरी बेटी ने कहा कि इसमें कुछ और परिवर्तन लाये जाएँ तो यह गहना और सुशोभित दीखेगा। तुम्हें फ़ौरन ही जाना होगा और बेटी जो परिवर्तन

रामकृष्ण जी.

चाहती है, करवाना होगा । बेटी के ससुराल जाने के पहले तुम्हें अपना काम पूरा करके लौटना होगा ।"

शशांक ने, ज़मींदार की बेटी से मिलकर आभूषण में जो सुधार करने थे, जान लिया । शहर जाकर वह जौहरी से मिला ।

जौहरी ने शशांक की सारी बातें सुनने के बाद कहा "मुझे याद नहीं आता, किस ज़मींदार का आप ज़िक्र कर रहे हैं । यहाँ कितने ही ज़मींदार, सरकारी अधिकारी, और बड़े-बड़े धनवान आभूषण खरीदने आते-जाते रहते हैं । जो भी हो, जो परिवर्तन आप चाहते हैं, उन्हें करना हमारा कर्तव्य है । परंतु पहले आपको वह बिल दिखाना पड़ेगा, जिससे यह निर्धारित हो सकेगा कि यह वस्तु यहीं खरीदी गयी है ।"

ज़मींदार ने शशांक को ऐसा कोई बिल नहीं दिया । उसके लिए फिर से ज़मींदार के पास जाने से परिश्रम व्यर्थ होगा और साथ ही समय भी । जो अवधि उसने दी, उसके अंदर पूर्ण होना असंभव है ।

इस स्थिति को दृष्टि में रखकर शशांक ने जौहरी से और एक बार फिर से बात की । लेकिन व्यापारी टस से मस ना हुआ । उसने स्पष्ट कहा "जो वस्तु आपने हमसे खरीदी है, उसी में तब्दीलियाँ लायी जा सकती हैं और आप चाहें तो तक्षण ही हम करके भी देंगे । आप तो देख ही रहे हैं, हम कितने व्यस्त हैं । दूसरों के यहाँ खरीदे गये आभूषणों में सुधार चाहते हों तो कम से कम एक हफ़्ते की अवधि हमें चाहिये ।"

शशांक ने जौहरी की बातें ग़ौर से सुनीं और कहा "ठीक है, मैं इस गहने को बेचना चाहता हूँ । खरीदने में आपको कोई एतराज है?"

"कितनी बड़ी बात कह दी आपने । पीढ़ी दर पीढ़ी से हम लोग गहनों का ही व्यापार करते आ रहे हैं । गहनों को बेचना और खरीदना ही हमारे वंश की वृत्ति रही है । भला गहने खरीदने में कैसी अड़चन? और हो भी क्यों? " कहते हुए उसने शशांक से गहना लिया, मूल्य आँका और तुरंत रक़म चुकायी । बिक्री के लिए तैयार और गहनों के साथ उसे भी सही स्थान पर रख दिया ।

शशांक रक़म लेकर चला गया और वापस आया, मानों उसे कोई उपाय सूझा हो। जौहरी के पास आकर बोला "महाशय, क्षणिक आवेश में आकर कहिये या बुद्धि भ्रष्ट होकर कहिये, मैने आपको गहना बेच दिया है। पर मैं सचमुच उसे बेचना नहीं चाहता था। लेकिन करूँ क्या? जो हो गया, सो हो गया। अब मैं उसे खरीदना चाहता हूँ। पर हाँ, गहने में छोटे-छोटे परिवर्तन मात्र आप करा दीजिये।"

जौहरी यह सुनकर खुश हुआ और अपना सिर हिलाता हुआ बोला "हमारी दुकान में गहने खरीदनेवाले आप जैसे आदरणीय खातेदारों की सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है। आप जो परिवर्तन चाहते हैं, अवश्य करेंगे।" उसने काम करनेवालों को बुलाया और उनको आदेश दिया कि शशांक से मांगे जानेवाले परिवर्तन तुरंत किये जाएँ और बिक्री के लिए वस्तु को तैयार रखें।

कुछ ही मिनिटों में अवश्यक परिवर्तन किये गये और वह गहना जौहरी को सौंपा गया। तब जौहरी ने शशांक से कहा "महाशय, आपसे जिस दाम में हमने गहना खरीदा है और हमसे आप जिस दाम में गहना खरीद रहे हैं, इन दोनों के मूल्य में थोड़ा-सा फरक होगा। गहना हमसे खरीदने के लिए एक सौ रुपये अधिक आपको हमें देने होंगे।"

गहने में आवश्यक सुधार के लिए ज़मींदार ने जो सौ रुपये दिये, वह शशांक के पास था। इसलिए अपना काम पूरा करने में उसे कोई दिक़्कत नहीं हुई। वह सफलतापूर्वक निश्चित अवधि के अंदर गहना लेकर ज़मींदार के पास आया।

सच तो यह है कि जौहरी और ज़मींदार एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित हैं। ज़मींदार के कहे मुताबिक ही जौहरी ने, गहने में सुधार करने से इनकार किया था।

जो भी हुआ, ज़मींदार ने शशांक से सब कुछ सुना। वह जान गया कि शशांक कार्य साधक है। उसने अपने दरबार में उसके पिता के पद पर उसे नियुक्त किया।

शिल्पी-शिल्पकला

बहुत पहले की बात है। विंध्य के पर्वत प्रांतों में शिलानंद नामक एक शिल्पाचार्य रहा करता था। उसके तराशे गये शिल्पों में जीबकला प्रस्फुटित होती थी। उनको देखते हुए लगता था मानों वे सजीव हैं।

डिंभक, कुम्भक दोनों शिलानंद के यहाँ गये। वे उसके यहाँ दस वर्ष रहे और शिल्प-कला की बारीकियाँ सीखीं।

विद्या पूर्ण होने के बाद जब वे निकलने लगे तब शिल्पाचार्य ने उनसे कहा"पुत्रो, तुम जैसे शिष्यों को पाना मेरा सौभाग्य है। तुम्हें जो भी मालूम है, उसे अपने शिष्यों को भी अवश्य सिखाना। प्रतिफल की प्रतीक्षा मत करना। भविष्य में समय मिलने पर मैं तुम लोगों से आकर मिलूँगा"।

डिंभक गाँव पहुँचा। उसकी पाँच एकड़ की ज़मीन है। उसकी कमाई से वह आराम से रह सकता है। नाट्य-शास्त्र से परिचित मीनाक्षी से उसने विवाह किया। उसने सोचा कि मीनाक्षी उसके शिल्प-निर्माण-कार्य में प्रेरणा बनकर रहेगी।

अगर कोई शिल्प बनवाना चाहे तो डिंभक उनसे कोई प्रतिफल स्वीकार नहीं करता था। अब उसके यहाँ बहुत से शिष्य इस कला को सीखने इकट्ठे हो गये। डिंभक बहुत परिश्रम करता था। उसे पल भर की भी फुरसत नहीं थी, फिर भी कभी भी वह किसी पर नाराज़ नहीं होता था या काम से थक जाता था। अपने और पड़ोस के गाँवों में डिंभक की तारीफ के पुल बाँधे जाने लगे।

यों कुछ साल गुज़र गये। एक दिन उस देश के राजा ने घोषणा करवायी कि देव नर्तकी मेनका का अद्भुत शिल्प-निर्माण जो करेगा, उसे एक हजार अशर्फियाँ भेंट में दी जाएँगी। उस शिल्प की प्रतिष्ठापना

-भार्गवी

निर्मित होनेवाले नृत्य–मंदिर में होगी। उसने अपनी घोषणा में यह भी कहा कि अपने नृत्य-मंदिर के लिए और शिल्पों की भी आवश्यकता है ।

डिंभक ने अपने शिष्यों को नृत्य-मंदिर के निर्माण–कार्य के लिये भेजा और स्वंय मेनका के शिल्प के निर्माण–कार्य में लग गया । एक दिन वे सब शिष्य लौट आये । क्योंकि मंदिर के निर्माण–कार्य के लिये राजा ने जो परीक्षाएँ चलायीं, उनमें वे उत्तीर्ण नहीं हो पाये ।

डिंभक ने उन उदास शिष्यों को ढ़ाढ़स बँधाते हुए कहा"चिंता मत करो । तुम लोगों की तृटियों को मैं अवश्य दूर करूँगा और मुझ जैसा योग्य बनाऊँगा ।"

वह मेनका का शिल्प बनाने के काम में जुट गया । इसके पूरे होते–होते तीन साल लग गये ।

एक और महीने तक डिंभक ने उस शिल्प की रूप–रेखाओं को सँबारने में बिताया । तभी उसे मालूम भी पड़ा कि राजधानी में नृत्य-मंदिर का भी निर्माण हो चुका है । वह शीघ्र ही बैलगाड़ी में शिल्प को लेकर निकल पड़ा ।

दो दिनों की यात्रा के बाद गाड़ी कुँभक के गाँव में पँहुची । वह गाँव बड़ा था । कुम्भक के बारे में कोई भी बता नहीं पाया कि वह कौन है और कहाँ रहता है? आखिर एक युवक ने याद करते हुए कहा"अच्छा, उस शिल्पकार की बात कर रहे हो । क्या तुम उससे शिल्प खरीदना चाहते हो? तब तुम उससे खरीद नहीं पाओगे । उसे धन की बड़ी लालच है" कहते हुए उसने उसका घर दिखाया ।

ऐसे तो कुम्भक का घर देखने में मामूली लगता है, पर वह खूब कमा रहा है । किसी को शिल्प बनाकर देता या अपने बनाये शिल्प को बेचता तो भारी रक़म वसूल करता था । यह विद्या सिखाने के लिए पर्याप्त मात्रा में धन भी लेता था, इसलिए उसके यहाँ अधिक शिष्य भी नहीं थे । वे जो थोड़े से थे, आजकल राजा के नृत्य-मंदिर के कार्य में लगे हुए हैं ।

सब विषयों को भली-भांति समझने के बाद डिंभक ने कुम्भक से कहा"जब हम अपनी

शिक्षा समाप्त करके निकल रहे थे तब याद है, हमारे गुरूजी ने क्या कहा? उन्होने स्पष्ट कहा कि प्रतिफल की आशा मत रखो" ।

"याद है । उनकी हर बात मेरे लिए शिरोधार्य है । प्रतिफल पर अगर मेरी दृष्टि होती तो मैं ठाठ-बाट से रहता । मेरे पास लाख अशर्फियाँ हैं, लेकिन एक सामान्य नागरिक की ज़िन्दगी गुज़ार रहा हुँ । हमारे घर के सब लोग अपने-अपने काम खुद कर लेते हैं, नौकर ही नहीं होते ।" कुम्भक ने जबाब दिया ।

डिंभक ने जान लिया कि वह अब्वल दर्जे का कंजूस है । पैसा कमाना ही उसका पेशा है । किसी को एक दमड़ी भी दान मे नहीं देता । लेकिन अपने विचारों को उसने ज़ाहिर होने नहीं दिया ।

कुम्भक ने डिंभक का खूब आदर-सत्कार किया । डिंभक एक दिन वहाँ रहा । और उसे लगा कि वह स्वर्ग में है । फिर दोनों राजधानी निकले । लेकिन दोनों ने एक दुसरे के शिल्प नहीं देखे । उन शिल्पों को उन्होने बड़ी सावधानी से घास और रुईं की गठरियों में सुरक्षित रखा ।

राजधानी पहुँचने पर दोनों राजा से मिले और अपने-अपने शिल्पों को उसे समर्पित किया । राजा ने उन्हें दूसरे दिन आने को कहा ।

राजा के प्रबंध किये गये अतिथिगृह में दोनों उस दिन ठहरे । वे दूसरे दिन राजा से मिले । राजा ने उन दोनों को आश्चर्य से देखते हुए कहा "तुम दोनों के शिल्प अद्भुत् हैं । ऐसा शिल्प–निर्माण मानव मात्र के लिये असाध्य है । परंतु दोनों शिल्प बिल्कुल एक जैसे हैं । नृत्य-मंदिर में दो स्थानों पर दोनों को प्रतिष्ठापित करना चाहता हुँ । कौन–सा शिल्प किसका है, बताने में अपने को असमर्थ पा रहा हुँ । तुम ही लोग पहचानो और बताओ ।"

दोनों शिल्पी, शिल्पों के पास गये । अपने शिल्पों को देखकर उनके चहेरों का रंग एकदम फीका पड़ गया, क्योंकि दोनों एक जैसे थे । कौन–सा किसका है, दोनों भी बताने में असमर्थ हो गये ।

"तुम दोनों समान प्रतिभाशाली शिल्पी हो । दोनों से निर्मित शिल्पों का एक जैसा

होना बड़ी ही अद्भुद विशेषता है ।" राजा ने उन दोनों से कहा ।

उस समय वहाँ शिलानंद आया । अपने शिष्यों की प्रतिभा को देखने के लिये वह राजधानी आया था ।

शिलानंद ने राजा का कहा सुना और राजा से अपना अभिप्राय बताया"सम्मान का हक़दार कुम्भक है । डिंभक का स्थान दूसरा है । चूँकि वे दोनों मेरे शिष्य हैं, मेंरे निर्णय को वे अस्वीकार नहीं करेंगे ।"

"आपके शिष्य आपके निर्णय को अस्वीकार ना करें, लेकिन कारण जाने बिना भला मैं कैसे स्वीकार कर सकता हूँ?" राजा ने कहा ।

शिलानंद ने उत्तर दिया "राजन्, डिंभक में असमान प्रतिभा है । परंतु विवेक नहीं । इसलिए उसने अपनी विद्या का दान अयोग्यों को दिया है । योग्य और अयोग्य का विचक्षण किये बिना जिसे चाहा, उसे शिल्प बनाकर दिया । ऐसा करके उसने कला के साथ अन्याय किया है । अलावा इसके, उसका शिष्य-समूह इस कला के प्रति अभिरुचि नहीं रखता था । उनमें ज्ञान प्राप्त करने की पिपासा नहीं थी । उनका इस कला के प्रति केवल एक मोह था । इसलिए आपके नृत्य-मंदिर के कार्य में वे अयोग्य सिद्ध हुए । कला के सच्चे मूल्य को पहचान कर जो उसकी पूजा करता है, वही कलाकार सम्मान के योग्य है । प्रशंसा नामक प्रतिफल पाने का इच्छुक रहा है, डिंभक । उसने अपने समय तथा कला का भी उपयोग अयोग्यों के लिये किया है । लेकिन योग्य और अयोग्यों को छानने के लिये ही कुंम्भक ने पैसा लिया है । इसलिए वही इस सम्मान के योग्य है । वह प्रतिभावान भी है और उसने शिल्पकला के प्रति अपना धर्म भी निभाया है ।"

शिलानंद के कहे अनुसार ही राजा ने, कुम्भक का सम्मान किया । डिंभक इस पर दुखी नहीं हुआ । उल्टे उसने जाना कि उसमें कौन–सी कमियाँ है, क्या दोष हैं और उसके मित्र की क्या–क्या विशिष्टताएँ हैं । इसके बाद उसने अपनी पद्धतियाँ बदलीं और भविष्य में बड़ा ही शिल्पी बना ।

चंदामामा की ख़बरें

हवाई जहाज़ की ख़ास यात्रा

एक बहुत ही जरूरी काम पर आप जा रहे हैं। बस चली गयी तो आप करेंगे क्या? आटो या टाक्सी पकड़कर आप जाएँगे। समझ लीजिये, जिस रेल-गाड़ी से आपको जाना था, वह छूट गयी। अगर सख़्त ज़रूरत आ पड़ी तो पैसे देकर आप हवाई जहाज़ में जा सकते हैं। समझ लीजिये, वह हवाई जहाज़ भी छूट गया, तब आप करेंगे क्या? ऐसी ही परिस्थिति का जब सामना करना पड़ा तब सौदी के शहज़ादे ने ख़ास हवाई जहाज का प्रबंध किया और गम्य स्थान पर गये। 'ट्राफ़िक' की वजह से उनके पारिस हवाई अड्डे पर पहुँचते-पहुँचते विलंब हुआ। जिस हवाई जहाज़ को न्यूयार्क जाना था, चला गया। उसके बाद का हवाई जहाज़ दो ढाई घंटों के बाद ही निकलेगा। शाहज़ादे को ढाई घंटे तक इंतज़ार करना अच्छा नहीं लगा। २,३६,००० डालर अदा किया और ख़ास हवाई जहाज़ में तीन घंटों के अंदर न्यूयार्क पहुँचा।

ब्रिटेन के एक सैनिक को घर में छोड़कर आये हुए चश्मा ले आने के लिए ३०,००० कि.मी.हवाई जहाज़ में यात्रा करनी पड़ी। अटलांटिक समुद्र के समीप के 'फाक लान्ड्स' में वह ड्यूटी पर लगा हुआ था। जब वह सैनिक फुटबाल खेल रहा था, उसका चश्मा टूट गया। कम्प्यूटर के सामने बैठकर उसे काम करना पड़ता था। इसलिए चश्मे के बिना उसका काम ही नही चलता था। दुर्भाग्य कि आसपास चश्मा देनेवाला कोई डाक्टर था ही नहीं। इसलिए उस सैनिक ने एक ख़ास हवाई जहाज़ का इंतज़ाम किया और अपने घर जाकर चश्मा ले आया। इसके सिवा कोई और चारा नहीं था।

बिंदु, लकीरें ग़ायब

समुद्री यात्रा में जहाज़ों के बीच परस्पर संदेश भेजने के लिए बिन्दु और लकीरों को संकेतों के रूप में उपयोग में लाया करते थे। वे इसे 'मोर्स कोड' कहते थे। उदाहरण के लिए तीन बिंदु-तीन लकीरें। तीन बिंदु भेजे जाएँ तो मतलब हुआ एस.ओ.एस (सेव अवर लैवस) हमारी रक्षा कीजिये। यह पद्धति बीसवीं शताब्दी में प्रारंभ हुई। परंतु आजकल, टेलिफोन, कम्प्यूटर और शाटलैट द्वारा एक जहाज़ से दूसरे जहाज़ में क्षणों में संदेश भेजे जाते हैं। यह विज्ञान-शास्त्र का अद्भुत आविष्कार है।

एक दिन राम अयोध्या में मंत्री और सामंतों के साथ जब राजसभा में आसीन था तब महर्षि विश्वामित्र बड़े वेग से अंदर आया और बोला "राम, काशी के राजा ययाती ने गर्व से अंधा होकर मेरा अपमान किया है। उस अधम राजा का अंत तुम्हें तक्षण करना होगा। तुम्हारे गुरू होने के नाते यह मेरी आज्ञा है।" आज्ञा दी और तक्षण ही लौट पड़ा।

विश्वामित्र की आज्ञा पर राम हतप्रभ हो गया। ययाति उन राजाओं में से एक था, जिसने राम के प्रति सदा आदर और विनय दिखाया। काशी राज्य का पालन उसने धर्म से हटकर कभी नहीं किया। बाल्य-काल में विश्वामित्र यागों की रक्षा के लिए राम लक्ष्मण को अपने साथ ले गया। राम को कितने ही दिव्यास्त्र दिये और दिलवाये। बल व अतिबल जैसी विद्याएँ सिखायीं। राम सोच में पड़ गया "फिर भी उस ययाती का बध कैसे करें, जिसे जनता चाहती है और जो मेरे प्रति अपार श्रद्धा व भक्ति रखता है। गुरुदेव विश्वामित्र की आज्ञा भी तो टाली नहीं जा सकती।"

राम राजसभा से उठकर अपने एकांतकक्ष में गया। वहाँ अपने मंत्री सुमंत को बुलाकर कहा "सुमंत, यह मेरा वैयक्तिक विषय है। अकेले जाकर मुझे अनिवार्य रूप से ययाति का बध करना होगा। हम दोनों द्वंद्व युद्ध करेंगे। यह युद्ध हम दोनों तक ही सीमित होगा। इस युद्ध से किसी भी प्रकार से प्रजा

को नहीं देखा । वह आखेट करने चल पड़ा ।

विश्वामित्र ने सोचा कि यह उसके प्रति जान-बूझकर किया गया घोर अपमान है । अपने ही आप कहने लगा" मुझे देखते ही ययाति को रथ से उतरना था, भक्ति और श्रद्धा से नत मस्तक हो प्रणाम करना था । परंतु ऐसा ना करके उसने मेरा घोर अपमान किया है । उस अधम ययाति का नाश नहीं करूँगा तो मैं विश्वामित्र ही नहीं ।" ऐसी घोर प्रतिज्ञा करके सीधे वह राम के पास गया और उसे आज्ञा दी । क्षण भर के लिए भी वहाँ ना ठहरकर लौट पड़ा ।

ययाति के शासन-काल में जनता को कभी कोई कष्ट नहीं पहुँचा । वह उनकी हर कमी की पूर्ति करता था । उनको अपनी संतान की ही तरह प्रेम से देखता था । ऐसे राजा के प्रति विश्वामित्र की आज्ञा राम को बड़ी ही विचित्र लगी । कारण पूछने की भी अवधि नहीं दी विश्वामित्र ने ।

परंतु वह गुरुवर विश्वामित्र की आज्ञा को भी टाल नहीं सकता । क्योंकि वह उनका गुरू था ।बल्य-काल में अस्त्र-शस्त्रों की विद्या राम कोउन्होने ही दी ।

राम के दूतों से यह समाचार सुनकर ययाति भय से काँप उठा । यशोधरा ययाति की पत्नी थी । चंद्रांग नामक उनका एक सुँदर बेटा था । चंद्रमुखी उसकी पुत्री थी । पूरा परिवार राम की आराधना करता था । जब उन सबको यह समाचार मिला, तो सब के सब शोक- सागर में डूब गये ।

की हानि नहीं होनी चाहिये । ययाति को तक्षण समाचार भेजिये कि राम तुम्हारा बध करने के लिए आ रहा है ।" राम के वचनों में स्थिरता थी, दृढ़ संकल्प था ।

विश्वामित्र और ययाति में जो शत्रुता हुई, उसका कारण यों है । ययाति के पास पीड़ित ग्रामीण ज़नता आयी और उन्होंने निवेदन किया कि जंगलों से झुँड़ के झुँड़ हाथी तथा अन्य जंतु गाँव और ग्रामीणों पर प्रहार कर रहे हैं, उन्हें अपार नष्ट पहुँचा रहे हैं । राजा ने उनकी विनती सुनी और उनको बाधाओं से मुक्त करने के लिए स्वयं उनका आखेट करने चल पडा । उसी समय विश्वामित्र उसी राह पर जा रहा था । आखेट के प्रयत्नों में मग्न रथ में बैठे ययाति ने विश्वामित्र

कुछ ही क्षणों में ययाति संभल गया और अपनी पत्नी से बोला "निरपराधी हूँ, शरणागत हूँ, आपकी दया पर जीवित हूँ, यह मैं स्वयं राम से निवेदन करूँगा । तुम तो जानती ही हो कि राम करुणामय हैं । वे कभी भी अन्याय नहीं करते, अनावश्यक किसी को बाधा नहीं पहुँचाते । ऋषि विश्वामित्र की व्यर्थ प्रतिज्ञा का वे सर्वथा विरोध ही करेंगे, क्योंकि मैं निर्दोषी हूँ । मुझे संपूर्ण विश्वास है कि राम ही इस संकट से हमें उबारेंगे ।"

राजा और उसका परिवार अयोध्या जाने निकल पड़े । रास्ते में नारद का साक्षात्कार हुआ । नारद ने ययाति से पूरी जनकारी प्राप्त की और ज़ोर से हँसते हुए कहा "नादान, विपत्ति के इस समय तुम्हारी बुद्धि पूर्ण रूप से भ्रष्ट हो गयी है । जानते ही हो, राम 'एक ही बाण, एक ही वचन' के नाम से सुप्रसिद्ध हैं । तुम्हें देखते ही वे तुम्हारा वध कर देंगे । अब सोच-विचार के लिए भी अवधि नहीं रह गयी है । अंजनादेवी के आश्रम में तक्षण जाओ । उनका अभय वर प्राप्त करो । जानते भी हो कि हनुमान उन्हीं का पुत्र है । वह इधर कुछ दिनों से वहीं रह रहा है ।"

ययाति को नारद की बातें सही जँचीं । तक्षण वह अंजनादेवी के आश्रम की ओर भागा ।

आश्रम में अंजनादेवी अपनी पूजा समाप्त करके उठनेवाली ही थी कि उसे आर्तनाद सुनायी पड़ा "शरणगत हूँ, रक्षा कीजिये । प्राणों की भिक्षा चाहता हूँ ।" बाहर आकर

अंजना ने देखा, हाथ बाँधे खड़े ययाति को, जो प्राण-भीति से थरथर काँप रहा था।

"पुत्र, भय का त्याग करो। अपने पुत्र की सौगंध खाकर कहती हूँ, तुम पर किसी भी विपदा को आने नहीं दूँगी। प्राण-भय छोड़ो" यों अंजना ने ययाति को अभय दिया।

तभी हनुमान गंधमादन पर्वत से आया हुआ था। ययाति ने माँ व पुत्र दोनों को प्रणाम करते हुए कहा "मेरा नाम ययाति है। काशी का राजा हूँ। श्रीराम के प्रति मेरे हृदय में अपार श्रद्धा और भक्ति है। आप ही मेरी रक्षा कर सकते हैं।" भयभीत होता हुआ उसने अपने बारे में कहा।

हनुमान ने ययाति की भुजाओं को थपथपाते हुए कहा "राजन्, अभी-अभी तो मेरी माता ने तुम्हें अभय दिया है। फिर भी भयभीत क्यों हो रहे हो? मैं भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपनी माँ की सौगंध को पूर्ण करूँगा।"

ययाति ने बड़े दीन स्वर में कहा "हे आँजनेय, क्या कहूँ? श्रीराम निष्कारण मेरा वध करनेवाले हैं"। उसने जो हुआ, सब हनुमान को सविस्तार बताया।

हनुमान मौन सब सुनता रहा।

"कितनी बड़ी भूल हो गयी। विना जाने ही मैने तुम्हें अभय दिया है। मुझसे अपराध हो गया है।" बड़ी व्याकुलता से अंजना ने कहा।

हनुमान ने तब अपनी माता से कहा "माते, चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। दुखियों की रक्षा करने से बढ़कर कोई और धर्म बड़ा नहीं। जब तक मैं जीवित हूँ, इस ययाति को कोई हानि नहीं पहुँचेगी।"

हनुमान ने ययाति को अभय दिया, यह बात सब को मालूम हो गयी। यह समाचार अयोध्या तक शीघ्र ही पहुँच गया। रामने भी यह सुना। अंतःपुर में सीता को भी मालूम हुआ।

अंतःपुर से जब सीता बाहर आ रही थी तब उसने यशोधरा को देखा। उसके साथ उसके दोनों बच्चे भी थे। यशोधरा निकट आयी और रोती हुई कहने लगी "माँ जानकी, मुझे पति के प्राणों की भिक्षा दो।"

"देवी, मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारा पति हनुमान के आश्रम में सुरक्षित है। विश्वास

करो कि उसे अब किसी प्रकार का भय नहीं । तुम और तुम्हारे बच्चे अब मेरे साथ यहीं रहो" सीता ने उनसे यों कहा और उनके ठहरने की पूरी व्यवस्था की । वे दोनों बच्चे सीता से हिल-मिल गये । उनको देखते हुए सीता में संतान की इच्छा जगी । वह सोचती कि मेरे भी ऐसे बच्चे हों तो कितना अच्छा होगा ।

राम धनुष-बाण लिये ययाति का वध करने पैदल चल पड़ा । उसके पीछे-पीछे तीनों भाई और मंत्री भी चले । राम के सिवा किसी भी के पास कोई हथियार नहीं था । राम जैसे ही निकट पहुँचा, हनुमान ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से उनका स्वागत किया । अपनी हथेली में फूल लिये उन्हे राम के चरणों पर ड़ालते हुए उसकी पाद-पूजा की ।

हनुमान राम के सामने घुटने टेककर बोला "राम, ययाति पर दया करो । वह निरपराधी है । बलहीन को दंड देना आप जैसे महान व्यक्ति के लिए शोभा नहीं देता । उसकी तरफ़ से मैं प्रार्थना कर रहा हूँ ।"

राम ने क्रोध से कहा "अच्छा, मुझसे कहने का यह साहस?" कहते हुए राम ने हनुमान को ठोकर मारी । उस स्पर्श से हनुमान बहुत ही आनंदित हुआ और बोला "जिस पाँव के स्पर्श से पथ्थर शाप-मुक्त होकर अहल्या में परिवर्तित हुआ और पवित्र हुआ, ऐसे पादस्पर्श से मैं भी आज धन्य हो गया हूँ । इस स्पर्श ने मेरे शरीर को अद्भुत शक्ति प्रदान की है ।"

राम और क्रोधित हो बोला "अरे बंदर, अब यह झूठी-मूठी प्रशंसा छोड़ो और ययाति को मेरे सुपुर्द कर दो । जानते हो ना, गुरुवर की आज्ञा का पालन करने के लिए मैं यहाँ आया हुआ हूँ ।"

"श्रीराम, आपने यह जानने का भी प्रयत्न नहीं किया कि आपके गुरु की आज्ञा कितनी असंगत और न्यायहीन है । बिना कारण जाने एक नादान का बध करने आप यहाँ आये हैं । अपनी माँ के वचन को निभाने के लिए मैंने ययाति को अभय दिया है । पहले मेरा वध कीजिये और पुनः अपना काम कीजिये ।" कहता हुआ हनुमान गंभीरता से उठा । अकस्मात हनुमान का शरीर आप ही आप विस्तृत होने लगा ।

चकाचौंध कर देनेवाले प्रकाश को व्याप्त करने लगा ।

यह देखकर राम ने कहा "अच्छा, तो तुम इतने बड़े हो गये हो । मैंने तो तुम्हें केवल एक वानर समझा । सोचा नहीं था कि मेरे ही विरुद्ध खड़े होने की क्षमता व साहस रखते हो?"

"हे श्रीराम, अभी-अभी तो मैं निवेदन कर चुका हूँ कि यह सब आपके पाद-स्पर्श की महिमा है" हनुमान ने कहा ।

राम ने धनुष निकाला और हनुमान को निशाना बनाया । हनुमान ने अपनी पूँछ निकाली और उसे धड़ाधड़ घुमाने लगा । राम जो भी अस्त्र छोड़ता, हनुमान उसे अपनी पूँछ से दूर फेंक देता ।

उस समय विश्वामित्र भी दौड़ा-दौड़ा वहाँ पहुँचा ।

राम के हर एक अस्त्र के साथ-साथ हनुमान अपने शरीर को बढ़ाता गया । वह अब महोन्नत हो गया । अब राम को धनुष और बाण ऊपर उठाने पड़े और आकाश में बाण छोड़ने पड़े । हनुमान ने वीर आसन लगाया और कहा "राम, अब आपके लक्ष्य-बेध के निकट हो गया हूँ ना?"

राम के क्रोध का छोर ना रहा । वह बोला "अब मैं आखिरी बार अपना रामबाण तेरी छाती को लक्ष्य करके बेध रहा हूँ । इससे तुम्हारा और मेरा दोनों का कार्य समाप्त होगा ।" कहते हुए राम ने अर्धचंद्र के आकार का अपना रामबाण निकाला ।

विश्वामित्र दौड़ता हुआ आकर बोला "राम, युद्ध समाप्त कर दो । मेरी इच्छा है कि हनुमान के प्रति प्रसन्न-चित्त हो जाओ । यह सब देखकर मेरा अहंकार दूर हो गया है । मैं जान गया हूँ कि इसमें ययाति का कोई दोष नहीं ।"

राम ने 'ना' के भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा "नहीं गुरुदेव, अभी मेरा अस्त्र सुरक्षित है । इसी क्षण आपकी आज्ञा का पालन करूँगा । कृपया मुझे मत रोकिये ।"

राम ने धनुष टंकारा और हनुमान को अपने अस्त्र का निशाना बनाया । और कहा "हनुमान, अपने रामबाण को तुम्हारी छाती

का निशाना बना रहा हूँ। अब ही सही, अपना अहंकार छोड़ो। ययाति को मुझे सौंप दो और कहलाओ कि तुम राम के सेवक हो।"

हनुमान ने तब राम से यों कहा "तब और अब मैं सदा राम का विश्वासपात्र सेवक हूँ। अपने वचन से मुकर जानेवाला कोई भी नीच आपके सेवक बनने की योग्यता नहीं रखता। ऐसा होने पर आपका ही अपमान होगा। शीघ्र ही अपना रामबाण छोड़िये। हृदयपूर्वक आपके इस बाण का स्वागत कर रहा हूँ।" कहते हुए हनुमान ने अपने हृदय को दोनों हाथों से चीरा और उसे बाण के बिलकुल सम्मुख रख दिया। वह बाण हनुमान के हृदय से आर-पार होता हुआ अदृश्य हो गया। तब हनुमान के हृदय में देदीप्यमान रूप से प्रकाशित होते हुए राम का रूप दिखायी पड़ा। इस अपूर्व घटना को वहाँ उपस्थित सब लोग निश्चेष्ट देखते ही रह गये।

राम ने अपना धनुष नीचे करते हुए कहा "हनुमान, तुम अजेय हो। मैं ही पराजित हुआ हूँ।"

जिन हाथों से हनुमान ने अपनी छाती को पकड़े रखा था, उन्हें छोड़ते ही वह यथावत् हो गयी।

"राम, इसमें जय और पराजय की कोई प्रसक्ति नहीं। मेरे हृदय में स्थित बाण को आप ही ने ग्रहण किया है। वह आप ही में लीन हो गया है। इसमें मेरा कोई बड़प्पन नहीं।" हनुमान ने सिर झुकाकर प्रणाम करते हुए राम से कहा।

विश्वामित्र ने हनुमान को अपने आलिंगन में लेते हुए कहा "हनुमान, शरणागत की रक्षा के लिए तुमने राम का भी विरोध किया है। अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति तुमने की है। तुम सच्चे वीर हो। 'वीर हनुमान' नाम अब सार्थक हुआ है। तुम्हारा यश तीनों लोकों में चिरस्थायी रहेगा।" हनुमान ने, राम को और उसके परिवार को प्रणाम किया। उन्हें बिदा किया और गंधमादन पर्वत पर तपस्या करने निकल पड़ा।

गंगा का गर्वभंग

एक गाँव में अनंत नाम का एक किसान रहा करता था । गंगा उसकी बहन थी । वह बहन को बहुत चाहता था । गंगा पहले से ही बड़े घमंड़ी स्वभाव की थी । अपने भाई का रत्ती भर भी आदर नहीं करती थी । पर अनंत को इसकी कोई चिंता नहीं थी । वह तो सिर्फ़ अपनी बहन की खुशी चाहता था । उसने एक अच्छा रिश्ता पक्का किया और दो एकड़ की ज़मीन दहेज में देकर उसकी शादी कर दी । फिर एक ग़रीब लडकी से बिना कोई दहेज लिये अपनी शादी कर ली ।

गंगा अपने ससुराल गयी तो अनंत की पत्नी अपना परिवार बसाने उसके यहाँ आयी । अपनी पत्नी के साथ वह हिलमिलकर रहने लगा । सुख और दुख में उसका साथ देने लगा । उसकी लगातार संतान होती रही । पारिवारिक बोझ बढ़ता गया । आखिर परिस्थिति इस हद तक पहुँची कि जिस दिन काम करते, उसी दिन वे खा पाते थे ।

अपने बच्चे जब भूख से तड़पते थे तो माँ–बाप के दिल दुख से फट जाते थे । वे सिसक सिसक कर रोते थे । जिन बच्चों को इस उम्र में खेलना-कूदना था, उन्हें भूख के मारे तड़पते देखकर उसकी पत्नी ने उससे कहा "हम लोग तकलीफ़ों से घिरे हुए हैं । एक बार तुम अपनी बहन के यहाँ हो आओ तो अच्छा होगा । जितनी सहायता वह कर पायेगी, करेगी ।"

"जा तो सकता हूँ, लेकिन वे भी तो कोई रईस हैं नहीं, जो हमारी मदद कर सकें । तुम्हें मालूम नहीं कि मैं कितना शर्मिंदा हो रहा हूँ । शादी हो गयी, लेकिन आज तक उसकी कोई ख़बर नहीं ली । उसके लिए माँ-बाप मैं ही हूँ । लेकिन मैंने अपना फ़र्ज़ नहीं निभाया । कौन-सा मुँह लेकर मैं अब उसके पास जाऊँगा । अब जाऊँ तो भी ख़ाली

हाथ जाना पड़ेगा । उसको देखने के लिए मैं भी तड़प रहा हूँ ।" अनंत ने कहा ।

"तो ठीक है, कम से कम देख आइये । शादी हुए पाँच साल हो गये । हमारी परिस्थिति जानकर बहन मदद करे तो करे, नहीं तो उसका कुशल- मंगल जानकर वापस लौटिये" पत्नी ने सलाह दी ।

अनंत अपनी पत्नी की बात टाल न सका । उसका दिया हुआ मांड पी लिया और बहन के ससुराल चल पड़ा । दिन भर उसने यात्रा की तो शाम को उनके यहाँ पहुँचा । दूर से ही आते हुए भाई को गंगा ने देखा । उसने देखा कि भाई फटे पुराने कपड़े पहने हुए है । उसके बाल इतने सूखे हैं मानों उनपर कभी तेल ही नहीं लगाया गया हो । उपवासों की वजह से दुबला पतला कमज़ोर शरीर, धंसी हुई आँखें साफ़ बता रही थीं कि भाई किस दीन स्थिति में है । उसकी दीन दशा को देखकर वह घबड़ा गयी । भाई के हाथ भी एकदम खाली थे । स्पष्ट दिखायी दे रहा था कि अपनी बहन को देने के लिए वह कुछ नहीं ला रहा है । उसे लगा कि शायद मुझी से कुछ माँगने आ रहा है ।

भाई को देखकर उसपर दया दिखाने के बदले मन ही मन सोचने लगी "इसके आने से हमारी खुशकिस्मती पर नजर पड़ जायेगी ।"

अनंत ने देखा कि बहन दरवाज़े पर खड़ी है । पल भर में उसने देखा कि वह वहाँ नहीं है तो उसने सोचा कि पाँव धोने के लिए पानी लाने अंदर गयी होगी ।

इस बीच गंगा ने निश्चय कर लिया कि
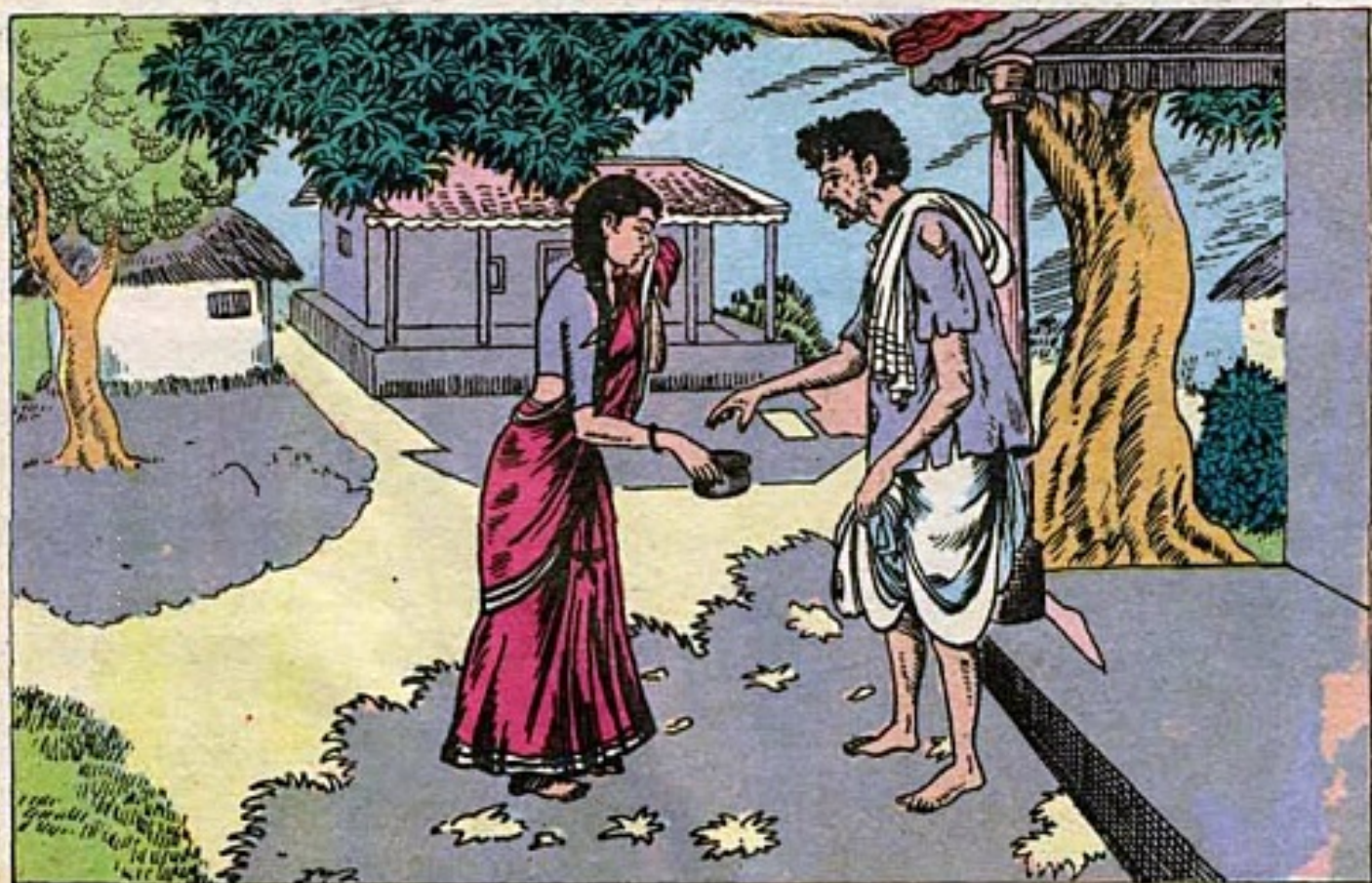
भाई को कैसे भी हो, जितना शीघ्र हो सके, वापस भेज देना चाहिये । वह अंदर गयी, चमकती साड़ी उतार दी और फटी साड़ी पहन ली । एक मटके में पानी लेकर उदास चेहरा लिये बाहर आयी ।

एक ही पल में अपनी बहन में जो परिवर्तन हुआ, उसे देखकर अनंत चकित रह गया । अपने मन को समझाया कि जिसे मैंने पहले देखा है, वह और कोई होगी ।

भाई को दरवाज़े पर खड़े देखकर गंगा जबरदस्ती अपनी आँखों में आँसू लाती हुई बोली "इतने लंबे समय के बाद तुम्हें हमारी याद आयी है । भैय्या, तुम तो समझते थे कि इस रिश्ते से मैं सुखी रहूँगी, लेकिन आज यहाँ दाने-दाने के लिए मुहताज हूँ ।"

अनंत अपनी बहन की हालत पर बहुत दुखी हुआ । उसकी सारी आशाएँ ढ़ह गयीं ।

भाई के घर के अंदर आ जाने से कहीं राज़ खुल ना जाए, इसलिए उसने बाहर ही एक टूटी—फूटी खाटिया ड़ाली । उसपर उसने अपना कपड़ा बिछा लिया और अनंत लेट गया ।

खेत से पति के लौटने का समय हो रहा था । भाई की जानकारी के बिना गंगा पिछवाड़े से दौड़ी और रास्ते में पति से जा मिली । उसने अपने भाई के आने की भी खबर सुनायी । उसका पति इस बात पर बेहद खुश हुआ, क्योंकि शादी के बाद उसका बहनोई पहली बार उसके घर आया हुआ है ।

जब गंगा ने देखा कि उसका पति उसकी बात को समझ नहीं पाया है तो उसने कहा "उसे मालुम हो जाये कि हमारे पास धन

है तो वह हमसे सहायता माँगेगा । हमें नाटक करना होगा कि हम बहुत ही ग़रीब हैं" ।

पति ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "बेचारा इतने सालों के बाद आया हुआ है और उससे हम ऐसा पेश आयें?"

"वह मेरा सगा भाई है । जब मै ही उसे नहीं चाहती तो तुम क्यों इतना परेशान होते हो?" गंगा ने कहा ।

पति ने सोचा, कुछ भी हो, एक तरह से यह भी तो ठीक है । गंगा ने एक पुरानी खटिया अपने पति के लिये भी बाहर ही ड़ाल दी । वह करता क्या, कोई चारा नहीं था । वहीं सो गया । अपने बहनोई से बात करने से उसे संकोच हो रहा था, इसलिए उसने ऐसा नाटक किया, मानों उसे देखा ही ना हो ।

आज त्योहार का दिन है । गंगा ने कई पकवान बनाये । कबाब में हड्डी बनकर अगर उसका भाई ना आता तो दोनों बड़े मज़े से उन्हे खाते । गंगा का पति तो उन्हें खाने उतावला हो रहा था । उसने सोचा, शायद थोड़ी रात और गुज़रने पर पत्नी बुलायेगी और खिलायेगी । इसी आशा में बिना सोये वह प्रतीक्षा कर रहा था ।

अनंत सो नहीं पाया । उसकी बहन की दरिद्रता उसे खाये जा रही थी ।

गंगा के पति को बहनोई पर दया आयी । फिर भी उसने निश्चय किया कि पत्नी का राज़ किसी भी हालत में खुलने नहीं दूँगा । ज़्यादा सर्दी लगने लगी । अपने पलंग के नीचे जो अंगीठी थी, उसे अनंत के पलंग के नीचे सरका दिया । इससे उसे थोड़ी-सी तृप्ति हुई ।

आधी रात हुई । गंगा का पति मस्त सो रहा था । अनंत जागा हुआ था । इतने में गंगा छाया की तरह हिलती हुई खाटों के पास आयी । उसने खटिया के नीचे रखी हुई अंगीठी देखी तो सोचा यही उसके पति की खटिया होगी । उसने धीरे से कहा "भोजन करने आ जाओ" और वहाँ से चल पड़ी ।

अपनी बहन का बरताव अनंत की समझ में नहीं आया । उसने सोचा, अपने पति से ड़रकर छिपे–छिपे उसे खाना खिलाना चाहती है । अपने कपड़े से उसने अपने को ओढ़ लिया और अंदर गया ।

पकवानों सहित खाना तैयार रखा हुआ

था। झिलमिलाती बत्ती की कांति में कुछ भी स्पष्ट नहीं दीख रहा था।

"खाना खा लेना। और खाना चाहो तो पास की हाँड़ी में हैं। जो चाहो ले लो।" कहती हुई दूसरी तरफ चली गयी। वह तो यही समझती थी कि कपड़ा ढककर आया हुआ आदमी उसका पति ही है। उसने पति की खटिया के नीचे अंगीठी रखी थी, जिससे वह जान पाये कि पति वही है।

यह बात उसने अपने पति से बतायी नहीं। वह वहाँ से सीधे जाकर दरवाज़े के पास बैठ गयी मानों कुछ नहीं जानती।

अनंत ने सोचा, बहन ने मेरे लिये कितना अच्छा खाना बनाया है। वह भर पेट खा गया। हाथ धो लिया। बहन की बात याद आयी कि जितना चाहो, हाँड़ी से ले लो। उसने कपड़ा बिछाया और गागर उँड़ेल दिया। उसमें चावल, पकवानों के अलावा और भी बहुत थे। उसने गठरी बांध ली। अपनी बहन को उसने बुलाया भी नहीं, क्योंकि उसे ड़र था कि ऐसा करने से उसका पति जाग उठेगा। पिछवाड़े से वह खुश होता हुआ बाहर चला गया।

थोड़ी देर के बाद भूखा उसका पति जागा। पत्नी के ना बुलाने से वह बहुत ही नाराज़ था। उसने चिल्लाया "अरी,खाना कहाँ है?"

दरवाज़े में बैठी गंगा ने कहा, "खाना तो खाया है, फिर भी ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाते क्यों हो?"

पति उसकी इन बातों से और नाराज़ हो गया और उसे लात मारी।

अब राज़ खुल गया। "तुमने अंगीठी क्यों बदल डाली।" गंगा ने सवाल किया। "मेरी इच्छा। जो मैं चाहूँगा, करूँगा। कल मेरे कोई सगे लोग आयेंगे, तो उनके साथ भी ऐसे ही पेश आओगी। चले जाओ मेरे घर से।" कहता हुआ उसने गंगा को बाहर ढ़केल दिया और दरवाजा बंद कर लिया।

घर पहुँचने पर अनंत ने देखा कि जो सामग्री वह ले आया था, उसमें बहुत–से रुपये भी थे। उन रुपयों से उसने एक गाड़ी और बैल खरीदे और आराम से रहने लगा।
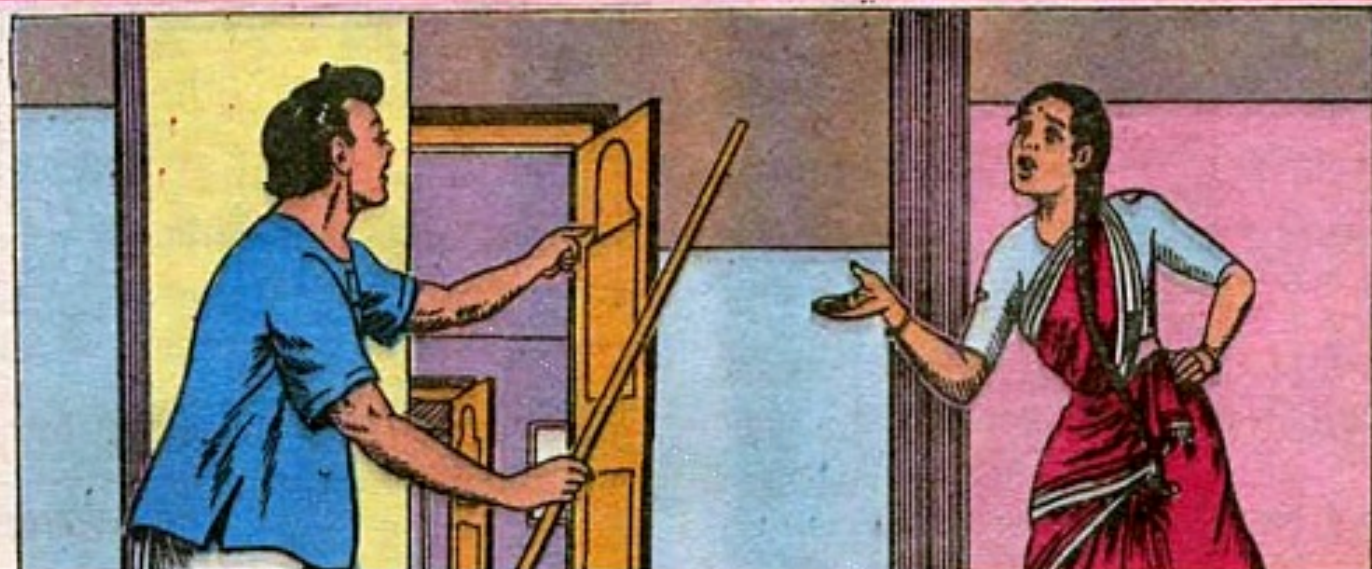
बच्चे–ख़बरों में

बच्चे–राजदूत

जापान के फ्युकोका नगर में पिछले जुलाई २४ से अगस्त ४ तारीख़ तक पाँचवी 'एशिया–पसिफिक बच्चों की महासभाएँ' संपन्न हुई। उन सभाओं में चालीस देशों से तीन सौ बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इन सभाओं का आयोजन किया "जूनियर चांबर इन्टरनेशनल" संस्था ने। संसार के विभिन्न देशों के 'जेसी' बच्चों ने इन सभाओं में भाग लिया। हमारे देश से आठ बच्चे गये। मद्रास के बारह साल के किशोर वी. गणेशरत्नम ने इस दल का नेतृत्व संभाला। गणेशरत्नम मद्रास के मोर्गटपेर के डी.ए.वी पाठशाला में आठवें दर्जे में शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

सभाओं से जैसे ही गणेशरत्नम लौटा, वैसे ही हमारे 'चंदामामा' कार्यालय में आया। आलबम दिखाया और बड़े उत्साह के साथ वहाँ के कार्यक्रम तथा गतिविधियों का सविस्तार विवरण दिया।

गणेशरत्नम के साथ जो सातों मित्र गये, सब एक जापानी परिवार के साथ रहे। इन्हें जापानी भाषा के दो-चार शब्द मालूम थे तो जापानी परिवार के लोग कुछ अंग्रेज़ी शब्द ही बोल पाते थे। "तो क्या हुआ? इशारों से हमने अपना काम चलाया" बालक ने बताया। सभाओं में जिन-जिन बच्चों ने भाग लिया उन-उन बच्चों ने अपने-अपने देशों के लोकनृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया। एक दिन वे अपने-अपने देश के रीति-रिवाज़ों के मुताबिक पोशाक पहनकर आये। गणेशरत्नम की पोशाक बिलकुल ही सहज और सादी लगी। (चित्र में यही फोटो है।) दूसरे दिन 'इकबेना' 'जुडो', 'ओरिग्मि' जैसी क्रीड़ाओं के आधार सूत्र सिखलाये गये। फिर विनोद यात्रा। मज़ा ही मज़ा था। 'ग्रीनलांड्स' 'अम्यूज़मेंट पार्क' 'मेरीन लांड्स' 'स्पेस वरल्ड' 'म्यूज़ियम', 'डालफिन शो' आदि मनमोहक जगहें देखीं। बुल्लेट रेल गाड़ी में भी यात्रा की। गणेशरत्नम ने यों पूरा विवरण दिया।

सभा के आखिरी दिन जो प्रस्ताव पारित हुआ, वह अब भी गणेशरत्नम के दिल में स्थिर रूप से स्थित है। वह प्रस्ताव यों था "प्रतिज्ञा करते हैं कि हम बालराजदूत, इस मनोहर भूमि को भविष्य में आनेवाली पीढ़ियों के लिये सुरक्षित रखेंगे। अपनी-अपनी मातृभूमियों के मनोमुग्धकारी सौंदर्य तथा संस्कृतियों को परस्पर बाँटने के लिये यहाँ हम इकट्ठे हुए हैं। अपने देशों की सीमाओं को

पार करके, आज अपने मित्रों के साथ संसार के भविष्य के बारे में चर्चा कर रहे हैं । एक दुसरे के अनुभवों को बाँट रहे हैं । हम इस अनुभूति से सराबोर हो रहे हैं कि हमारे जीवन–तटों को शांति और स्नेह के तरंग स्पर्श कर रहे हैं । संसार में शाश्वत शांति की स्थापना के लिये हम अपने स्नेह और बंधुत्व को और दृढ़ बना रहे हैं ।" उनसे यह भी बताया गया "भूमि नामक इस 'अंतरिक्ष नौका' को चला सकनेवाले अद्भुत सारथी हैं बालक । भविष्य में आपमें से कुछ बालक-बालिकाएँ नेता बनकर संसार में शांति की स्थापना करने में सफल होंगे । आप में से ऐसे धीर–वीर भी मौजूद हैं ।" इस सभा में यह बात भी बड़े बिश्वास के साथ बतायी गयी । ऐसे अवकाश विरले ही प्राप्त होते हैं । गणेशरत्नम को हम बधाई देते हैं, जिसने ऐसे अवकाश का सदुपयोग किया है । हम आशा करते हैं कि वह भविष्य में और भी बिजय प्राप्त करेगा । उसे हमारी हृदयपूर्वक शुभ कामनाएँ ।

चार वर्ष का कार ड्रैवर

कोई ऐसा बच्चा नहीं होगा, जो ड्रैवर की सीट पर बैठकर स्टीरिंग घुमाते हुए कार चलाने की इच्छा नहीं रखता हो । ऐसे बच्चों में से हैदराबाद की नन्ही बच्ची जुही अग्रवाल भी एक है । आज वही बच्ची अकेली कार में बैठकर, स्टीरिंग पकड़े, स्टॉर्ट करके आराम से कार को चलाकर ले जा सकती है । परंतु वह बच्ची है सिर्फ चार साल की उम्र की । यही तो ख़ास बात है । जुही को गुड़ियों से बेहद प्यार है । 'रिमोट कंट्रोल' वाले गुड़ियों का तो उसे बहुत ही चाव है । उसकी इस चाव को देखकर उसके माता–पिता ने उसे प्रशिक्षण दिलवाने का निश्चय किया । उसे प्रशिक्षण स्कूल में अधिक समय नहीं लगा । उसके बाद उसने ट्राफिक के नियम और सिगनलों के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त की । वह अब अकेली ही कार चला सकती है । जुही की तीव्र इच्छा है कि बड़ी हो जाने के बाद अपनी माँ को कार में बहुत दूर ले जाऊँ ।

प्रमोद कुमार और वनिता की इस लाड़ली बच्ची ने तीन साल की उम्र में ही तैरना सीख लिया । अब बारह फुट की ऊँचाई से पानी में बिना झिझक के वह कूद सकती है ।

बच्चों को एक और शुभ समाचार । मैसूर विश्वविद्यालय के एक मेकानिकल इंजनीयर ने बच्चों के लिए ख़ास तौर से एक मोटर कार बनायी है । 'टाय मोटो' नामक यह कार ३५ सी.सी पेट्रोल के इंजन से चलती है । ८५ कि.ग्राम के बोझ को भी ढो सकती है । इसकी क़ीमत क़रीबन पँद्रह हज़ार रुपये हैं ।

मेलजोल

शेखर काशिपुर का संपन्न किसान है ।वह अपनी इकलौती पुत्री सुमति की शादी की तैयारियों में पूर्ण रूप से लगा हुआ है । उसका विचार है कि उसके दूर के रिश्तेदार शंकर का बेटा नरेंद्र सब प्रकार से योग्य है । परंतु नरेंद्र एक सामान्य परिवार का है ।शंकर का ही दो एकड़ का खेत उसने पट्टे पर लिया है और खेती कर रहा है । उस आमदनी से अपने माता-पिता की अच्छी तरह से देख-भाल भी कर रहा है ।

जब पुत्री के विवाह की चर्चा हो रही थी तब शेखर की पत्नी पार्वती ने कहा "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि उस नरेंद्र से अपनी बेटी की शादी की बात आप क्यों और कैसे सोच रहे हैं? वह तो हमारे पट्टे पर दिये गये खेत पर निर्भर है । उसकी तो और कोई आमदनी ही नहीं है । ऐसे निर्धन से शादी करने से हमारी बेटी कैसे सुखी रह सकती है? आख़िर वह हमारी इकलौती बेटी है । उसके भविष्य का ख्याल अगर हम नहीं रखेंगे तो कौन रखेगा? मेरी सहेली दुर्गा का बेटा प्रताप देखने में सुँदर है । हमारी ही तरह उनकी भी काफ़ी जायदाद है ।यह रिश्ता बिलकुल ही हमारे स्तर का होगा ।"

शेखर अपनी पत्नी की बातों पर झल्लाता हुआ बोला "नरेंद्र भी कोई कम सुँदर नही हैं । फिर रही जायदाद की बात । हमारी जो भी जायदाद है, सब कुछ बेटी की ही तो है । पति-पत्नी जुओं में जुड़े दो बैलों की जोड़ी जैसे हैं । उनके बीच में मेल-जोल का होना बहुत ही ज़रूरी है । नरेंद्र की आदतें और दूसरों के साथ किया जानेवाला उसका व्यवहार देखते हुए मुझे पूरा विश्वास है कि वही हमारी बेटी के लिए योग्य वर है ।"

"तो आपके कहने का क्या यह मतलब है कि मेरी सहेली का बेटा प्रताप मेल-जोल

का स्वभाव नहीं रख्ता? वह बहुत ही नादान और सभ्य है?" तिलमिलाती हुई पार्वती ने कहा ।

इसपर शेखर धीरे से हँसा और बोला "मैने तो ऐसा थोड़े ही कहा । तो ठीक है, नरेंद्र और प्रताप की परीक्षा लेंगे और फिर निर्णय करेंगें कि हमारी बेटी की शादी किससे हो? मेरे इस प्रस्ताव को तुम मानती हो ना?"

पार्वती ने सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी । दूसरे दी दिन शेखर ने प्रताप को बुलाया और कहा "पड़ोस के गाँव में हाट लगी है । यह रकम लो और बैलों की एक अच्छी जोड़ी चुनकर खरीदकर लाना । देखो बेटे, बैलों के बीच मेल-जोल का होना बहुत ही ज़रूरी है । ऐसा नहीं हुआ तो हमारे खेतों में ठीक तरह से काम नहीं होगा । इसलिए बैलों के चुनाव में सावधानी बरतना ।"

सबेरे ही प्रताप हाट चल पड़ा । वहाँ बहुत-से बैलों की जोड़ियाँ बिक्री के लिए थीं । उनको देखते हुए बहुत देर तक वह घूमता रहा और आखिर बैलों के दलाल से कहा "हाँ, बैल तो देखने में सब अच्छे ही लग रहे हैं । परंतु क्या इन बैलों के बीच मेल-जोल है? ऐसा होने पर ही मैं खरीदूँगा ।"

विक्रेता प्रताप की बातें सुनकर आपस में कहने लगे कि यह बैल खरीदने आया है या और कुछ । कहीं यह पागल तो नहीं? वे उसकी बातों पर आप ही आप हँसने भी लगे ।

प्रताप दुपहर तक शेखर के पास लौटा और बोला "हाट में बिक्री के लिए बहुत-से बैल हैं । मैने जब बेचनेवालों से पूछा कि

मेल-जोलवाले बैल मुझे चाहिये तो वे मेरी तरफ़ ताज्जुब से देखने लग गये। उनके बरताव पर मुझे बहुत नाराज़ी आयी। जो इज़्ज़त देना नहीं जानते, उनसे भला क्या सौदा किया जाए? इसलिए मैं वहाँ से खरीदे बिना वापस आ गया।"

फिर शेखर ने नरेंद्र को बुलाया और उससे भी वही बात बतायी, जो प्रताप को बतायी थी।

उसी दिन वह शाम को सुँदर बैलों की जोड़ी खरीदकर उन्हें हाँकते हुए ले आया। देखने से ही लगता था कि उन बैलों में अच्छा मेल-जोल है।

शेखर उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ और बोला "बैल तो बहुत ही उम्दे लग रहे हैं। किन्तु तुम्हें कैसे मालूम है कि ये मिल-जुलकर गाड़ी खींच पायेंगे?"

'पूरा ब्योरा जानने के बाद ही मैंने सौदा किया और हाँककर ले आया हूँ" नरेंद्र ने आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा।

दरवाज़े पर खड़ी पार्वती व्यंग्य भरे स्वर में बोली "ज़रा हमें यह तो बताओ कि तुम यह कैसे जान गये? जानकर हमें भी खुशी होगी।"

जवाब में नरेंद्र ने कहा "खरीदने के पहले दोनों बैलों को जुए में जोता और चाबुक से एक बैल को मारा। वह जैसे ही निकला, दूसरा भी निकल पड़ा और गाड़ी खींचने लगे। यही तो उनका मेल-जोल है ना?" कहते हुए वह बैलों को बाँधने ले गया।

जाते हुए नरेंद्र को देखकर पार्वती मन ही मन बहुत खुश हो रही थी। यह देखकर शेखर ने अपनी पत्नी से कहा "देखा, प्रताप और नरेंद्र के बीच का फरक। देखो, बात तो हर कोई समझता है। लेकिन नरेंद्र ने अक़्ल से काम लिया और अपने काम में कामयाब हो गया। प्रताप की बुरी तरह से हार हुई।"

"क्या मैं इतना भी नहीं समझती? बुद्धू थोडी ही हूँ। शीघ्र ही हमारी बेटी की शादी नरेंद्र से करा देंगे" पार्वती ने खुशी-खुशी यह बात कही।

प्रकृति–रूप अनेक

मधुमक्खी का जीवाश्म

पाँच करोड़ साल पहले क्या मधुमक्खी थी? बताया जाता है कि थी । जर्मनी के पुरातत्व शास्त्रवेत्ताओं को, ईफेल प्रांत के एक पथ्थर के बीच में छोटी–सी मधुमक्खी का जीवाश्म उपलब्ध हुआ । इसी के आधार पर उनका दावा है कि यह जीवाश्म ही संसार में अति प्राचीन है । ९ मि-मीटर की लंबाई का इस मक्खी का जीवाश्म ही थोड़ा-सा परिवर्तित होकर आज की मधुमक्खी बनी है ।

राक्षस चिपकली के अंड़े

चीन में, सात करोड़ पचास लाख सालों के पूर्व के राक्षस चिपकलियों के (डिनोजार) अंड़े पाये गये हैं, तो अमरीका में, चौदह करोड़ पचास सालों के पूर्व के राक्षस चिपकलियों के अंड़े पाये गये हैं । चीन में हेनान के समीप अंड़ों की जो जोडी मिली, उन्हें जर्मनी के हमोवर के अनुसंधान संस्था में भेजा गया । वे अनुसंधान कर रहे हैं कि इन अंड़ों में जीवाश्म के रूप में परिवर्तित पिंड हैं क्या? अमेरीका के डेन्वीर के समीप टूटा हुआ जो अंड़ा मिला, उसके खपड़े के अंदर के भाग में जीवाश्म का पिंड पाया गया । इसके पहले कालरोडो प्रांत में छह अंड़ों के ऊपर के खपड़े भी उन्हें मयस्सर हुए । उटा में राक्षस चिपकली के जो अंड़े मिले, वे परिमाण में मुर्गी के अंड़ों से बड़े पाये गये ।

तमिलनाडु में 'दाँतों का चमगीदड़'

गिन्नीस पुस्तक के अनुसार संसार में बहुत ही कम पाये जानेवाले तीन प्रकार के चमगीदड़ों में से एक है 'दाँतों का चमगीदड़ ।' पाँच सालों के पहले ए. एफ. हाटन नामक एक पक्षी-शास्त्रज्ञ ने तमिलनाडु के पश्चिमी पहाड़ों में इस दाँतवाले चमगीदड़ को देखा । उसे वे बंबई 'नाचुरल हिस्टरी सोसाइटी' मे ले गये । उसकी खूब परीक्षा की गयी और शास्त्रजों ने क़रार किया कि यह बिरले ही मिलनेवाली जाति का है । इसलिए प्रसिद्ध पक्षी-शास्त्रज्ञ डा. सलीम का नाम इसे दिया गया । इसी साल बंबई की संस्था के एक शास्त्रज्ञ ने तथा इंग्लैंड के 'हारिसन जुवलाजिकल म्यूज़ियम' के एक दूसरे शास्त्रज्ञ ने तमिलनाडु के उसी प्रदेश में इस चमगीदड़ को देखा । ये दोनों संस्थाएँ चमगीदड़ों के बारे में अनुसंधान कर रही हैं ।

चांदोबा
चन्दामामा

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जनवरी, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M. Natarajan

Phal Singh Girota

* उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । * १० नवम्बर'९३ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । * दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

सितम्बर १९९३, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **एक फूल आँखों का तारा!**

दूसरा फोटो : **दो से महके आंगन सारा!!**

प्रेषक : मोहन प्रसाद साहू Pusour (Po), Raigarh (Dt.)
Madhya Pradesh-496440

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and **Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.**

YOU'LL
DROP
Everything for BAKEMAN'S
MILK DROPS